संस्थापित १८६७ ई.

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ २,५००
वार्षिक शुल्क ₹ २००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ ५.००

● वर्ष : १२८ ● संयुक्तांक : १४ एवं १५ ● ०६ एवं १३ अप्रैल, २०२३ (गुरुवार) वैशाख कृष्णपक्ष अष्टमी सम्वत् २०८० ● दयानन्दाब्द १६६ वेद व मानव सृष्टि सम्वत्:१६६०८५३१२४

स्वामी दयानंद सरस्वती की 200वीं जन्म जयंती के शुभ अवसर पर

स्मृति डाक टिकट का विमोचन उप राष्ट्रपति माननीय जगदीप धनखड़ द्वारा

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की २००वीं जन्म जयंती के शुभ अवसर पर दिनांक ७ अप्रैल २०२३ को प्रातः प्लेनरी हाल विज्ञान भवन नई दिल्ली में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी द्वारा महर्षि के स्मारक डाक टिकट का विमोचन किया गया।

इस शुभ अवसर पर महामहिम उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी ने आर्यो के विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुये कहा कि ''महर्षि दयानन्द सरस्वती'' एक महान दार्शनिक के साथ-साथ एक समाज सुधारक भी थे। महर्षि ने सामाजिक कुरीतियों के प्रति लोगों को जागरूक करके भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में बलिदानियों के प्रेरणा श्रोत भी बने। महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से ही श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, सरदार भगत सिंह व उनके दादा सरदार अर्जुन सिंह, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, रामप्रसाद बिस्मिल आदि क्रांतिवीरों ने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती की २००वीं जयंती के अवसर पर उनकी स्मृति में भारत सरकार डाक टिकट जारी करके महर्षि के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है। महर्षि के समस्त मानव जाति पर, विशेष कर भारत के लोगों का उऋण हो पाना असम्भव है। माननीय उप राष्ट्रपति जी ने बताया कि मेरा विवाह श्रीमती सुदेश धनखड़ के साथ वैदिक विधि से हुआ था। इस शुभ अवसर पर महर्षि के प्रति मैं अपनी श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में स्वामी रामदेव जी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखे गये कालजयी ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को अपना प्रेरक बताया। उन्होंने कहा कि महर्षि ने वेदों को मुख्य केन्द्र बिन्दु बनाकर कार्य किया था।

समारोह को स्वामी चिदानंद, श्री देवु सिंह चौहान, संचार राज्य मंत्री भारत सरकार, स्वामी सुमेधा नन्द, सांसद सीकर राजस्थान, आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक आदि ने भी सम्बोधित किया।

आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेंद्रपाल वर्मा जी ने समारोह में अपने संबोधन में कहा कि ''यह हम सभी आर्यों के लिए सौभाग्य की बात है कि हम लोग महर्षि दयानंद सरस्वती की २००वीं जयंती के प्रत्यक्षदर्शी हैं। सन् १६२५ की प्रथम जन्मशती में हम नहीं थे, लेकिन इस २००वीं जयंती में हम सभी को प्रत्यक्षदर्शी बनने का अवसर प्राप्त हुआ है।'' महर्षि के सुधार कार्यों को सरकार ने कानून बनाकर समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त कर दिया है। महर्षि के बाद उनके अनुयायियों ने अनेकों सुधार किए हैं। महर्षि के विचार आज भी प्रासंगिक है उनके बताए रास्ते पर चलकर ही विश्व में सुख शांति प्राप्त की जा सकती है। हम आर्यों के पास यह स्वर्णिम अवसर है कि महर्षि के कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम् के सपने को साकार करें। ●●●

वेदामृतम्

न त्वा शतं चन ह तो, राधो दित्सन्तमामिनन् ।
यत् पुनानो मखस्यसे ।। ऋग् ६.६१.२७

हे पवमान सोम ! हे स्वयं को तथा मन, बुद्धि आदि को पवित्र करने वाले सात्त्विक वृत्ति जीवात्मन् ! जब तू परोपकार का यज्ञ रचाता है और अपना धन किन्ही सत्पात्र व्यक्तियों को या संस्थाओं को दान देने का संकल्प करता है, तब बहुत-सी कुटिल स्वार्थ-वृत्तियाँ और बहुत-से कुटिल मनुष्य तेरे उस दान-व्रत की हिंसा करना चाहते हैं और तुझे दान के मार्ग से विचलित करने का प्रयत्न करते हैं। स्वार्थ-वृत्ति कहती है कि सहस्र, दश, सहस्र, पचास सहस्र, लाख, दो लाख रुपया तुम अन्यों को दान कर रहे हो, तो क्या स्वयं भूखे मरना चाहते हो ? देखो, सब अपनी सम्पत्ति बढ़ा रहे हैं, जो सहस्रपति है। वह लक्षपति बन रहा है, जो लक्षपति है वह करोड़पति बन रहा है। उनके पास कई-कई कोठियाँ हैं, मोटरकारें हैं, सेवक हैं। क्या दान का ठेका तुमने ही लिया है ? क्या तुम्हारे ही भाग्य में यह लिखा है कि तुम स्वयं तो मोटा-झोटा पहनो, रूखा-सूखा खायो झोपड़ी जैसे मकानों में रहो और दूसरों पर धन लुटाओ। पहले अपनी और अपने कुटुम्ब की स्थिति सुधारो, फिर अन्यों की सुध लेना । हे आत्मन् ! तू उस स्वार्थ-वाणी को मत सुन तुझे दान करने के लिए उद्यत देख कई स्वार्थी परिचित मनुष्य भी आकर मिथ्या ही आलोचना करते हैं कि तुम जिस संस्था को दान करने जा रहे हो, उसकी आन्तरिक अवस्था को भी जानते हो ? उसमें सब खाऊ-पिऊ बैठे हैं, तुम्हारा दिया हुआ दान उन्हीं के पेट में जाएगा। हे आत्मन् ! तू उन स्वार्थी जनों के भी कुटिल परामर्श पर ध्यान मत दे। सौ प्रकार की स्वार्थ भावनाएँ और सौ स्वार्थी-जन भी तुझे तेरे दान के संकल्प से विचलित न कर सकें।

हे मेरे आत्मन् ! वेद-शास्त्रों की वाणी सुन, जो तुझे दान के लिए प्रेरित कर रही है। तू अपनी कमाई में से प्रतिदिन या प्रतिमास कुछ निश्चित प्रतिशत दान-खाते में डाल और उसे लोक कल्याण में व्यय कर दान से दक्षिणा पानेवाले का तो हित होता ही है, उससे भी अधिक हित और मंगल दाता का होता है, यह वैदिक संस्कृति की भावना है। इसके विपरीत, अकेला भोग करने वाला मनुष्य पाप का ही भोग करता है।

साभार-वेदमंजरी

राष्ट्रीय अखण्डता और महर्षि दयानन्द

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

भारतीय नवजागरण के अग्रदूत महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित विचारों की भारत की राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने तथा देश की अखण्डता की रक्षा में क्या उपयोगिता है? यदि हम संसार के सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ वेदों का अवलोकन करें, तो हमें विदित होता है कि वैदिक वाङ्मय में सर्वप्रथम राष्ट्र की विस्तृत चर्चा उपलब्ध है। अथर्ववेद के १२वें काण्ड का प्रथम सूक्त भूमि या मातृभूमि की वंदना है, जो हमारे समक्ष राष्ट्र की परिपूर्ण तथा सुविचारित कल्पना प्रस्तुत करता है। इसे वेद का राष्ट्रीय गीत भी कह सकते हैं।

सार्वभौम राष्ट्र की कल्पना- वेद में राष्ट्र की जैसी धारणा व्यक्त की गई है तथा उसके प्रति नागरिकों के जिन कर्तृतव्यों का निर्धारण किया गया, उसे ही इन ६३ मंत्रों में सुस्पष्ट ढंग से परिभाषित किया गया है। इस सूक्त के सभी मंत्र इतने गम्भीर तथा व्यापक हैं कि किसी भी देश का वासी इनके अर्थों का चिन्तन कर एक सच्चा और अच्छा नागरिक बन सकता है। यहाँ यह स्पष्ट कर दिया गया है कि यद्यपि एक ही देश के निवासियों के आचार-विचार, खान-पान, रहन-सहन, वेश-भूषा, भाषा आदि में विभिन्नता हो सकती है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि उन्हीं

क्रमशः पृ. ६.....

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

पंकज जायसवाल
मंत्री/सम्पादक

आर्य शिवशंकर वैश्य
प्रबन्ध सम्पादक

सम्पादकीय.....

''ज्ञान एवं आनन्द''

''यदि आपको सुख शांति चाहिए, तो आप वेदों तथा ऋषियों के ग्रंथों का अध्ययन, ईश्वर का ध्यान, और समाज की सेवा, ये तीनों कार्य करें।''

सुख शांति हर व्यक्ति को चाहिए। बहुत से लोग धनवान हैं। उनके पास भोजन वस्त्र मकान मोटर गाड़ी आदि किसी भौतिक वस्तु की कमी नहीं है। सब प्रकार से सुविधा संपन्न हैं। ''इतना सब होते हुए भी उनके पास शांति नहीं है। मन में संतोष नहीं है। वे अपने जीवन से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हैं। कोई न कोई, कहीं ना कहीं शिकायत बनी ही रहती है।''

ऐसी स्थिति में लोग पूछते हैं, जिनके पास भौतिक साधन आदि सब कुछ है, फिर भी वे अतृप्त क्यों हैं? उन के जीवन में पूर्णता क्यों नहीं है? इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से है, कि -- ''आत्मा जब शरीर धारण करता है, तो उसे सुखपूर्वक जीवन जीने के लिए, कुछ तो भोजन वस्त्र मकान आदि भौतिक साधनों की आवश्यकता पड़ती है, और कुछ अपनी तृप्ति के लिए ज्ञान तथा आनंद की आवश्यकता भी होती है।''

आजकल लोग कुछ पढ़ाई लिखाई करके, डिग्री प्राप्त करके, नौकरी व्यापार करके धन कमा लेते हैं, उससे भौतिक साधनों की प्राप्ति तो कर लेते हैं। ''परंतु ज्ञान और आनंद की प्राप्ति प्रायः नहीं कर पाते। इसलिए उनके जीवन में अधूरापन, असंतोष, अतृप्ति का भाव दिखाई देता है।''

यदि ज्ञान और आनंद प्राप्त करना हो, तो इसके लिए तीन काम करने पड़ते हैं। ''पहला - वेदों तथा ऋषियों के ग्रंथों का अध्ययन करना। दूसरा - ईश्वर का ध्यान करना, समाधि लगाना। तीसरा - समाज की निष्काम भाव से सेवा करना।'' ''जो व्यक्ति इन तीन कार्यों को पूरी श्रद्धा एवं उत्तम रीति से करता है, उसे ज्ञान और आनंद की प्राप्ति हो जाती है। वह अपने जीवन में पूर्णता या तृप्ति का अनुभव करता है।''

थोड़ा बहुत ज्ञान तो सभी के पास है, परंतु वह आधा अधूरा भ्रांति एवं संशय से युक्त है। जब तक ज्ञान शुद्ध नहीं होगा, तब तक आनंद की प्राप्ति नहीं होगी। ''शुद्ध ज्ञान वेदों तथा ऋषियों के ग्रंथों से मिलता है। इसलिए वेदों और ऋषियों के ग्रंथों को किसी योग्य गुरु जी से पढ़ना चाहिए।''

केवल पुस्तकें पढ़ने से आनन्द की पूर्णता नहीं आती। पुस्तकें पढ़ने से ज्ञान तो मिलता है और उससे आनंद भी मिलता है। परंतु जितना आनंद एक मनुष्य को चाहिए, पुस्तकों से मिलने वाला आनन्द, उसका एक तिहाई भाग है। ''दूसरे तिहाई भाग के लिए उसे ईश्वर का ध्यान भी करना चाहिए। उससे भी एक तिहाई भाग आनंद की प्राप्ति होती है। इसलिए पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ ईश्वर का ध्यान भी करें।''

बचा आनन्द का एक तिहाई भाग। ''उसकी प्राप्ति निष्काम भाव से समाज की सेवा करने से होती है।'' जो भी वेद आदि शास्त्रों का अध्ययन करने से आपको ज्ञान प्राप्त हुआ, ईश्वर की उपासना करने से जो आनंद मिला, ''अपना वह ज्ञान और आनंद का अनुभव दूसरों को बांटने से, निष्काम कर्म करने से, आनंद का एक तिहाई भाग और ईश्वर दे देता है। इस प्रकार से हमें पूर्णता से जीवन में आनंद की अनुभूति होती है।''

''जो लोग भौतिक साधनों के अतिरिक्त अपने जीवन में आनंद की पूर्णता अनुभव करना चाहते हैं, वे वेद आदि सत्य शास्त्रों का अध्ययन करें। वेदोक्त निराकार न्यायकारी दयालु आनंदस्वरूप ईश्वर का ध्यान करें। इससे वे अन्दर से मुस्कुराएंगे। और फिर वे जब समाज की निष्काम सेवा करेंगे, तो समाज भी मुस्कुराएगा। उससे पृथ्वी पर स्वर्गमय वातावरण बन जाएगा। ऐसा स्वर्गमय वातावरण हम सबको मिलकर इस पृथ्वी पर बनाना चाहिए। तभी मानव जीवन की सफलता मानी जाएगी।''

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक की कलम से....

-सम्पादक

गतांक से आगे.....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ त्रयोदश समुल्लास

अथ कृश्चीनमत विषयं व्याख्यास्यामः

लैव्य व्यवस्था की पुस्तक तौ.

५०-और परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मण्डली के तम्बू में से यह वचन उसे कहा।। कि इस्राएल के सन्तानों से बोल और उन्हें कह यदि कोई तुम्में से परमेश्वर के लिये भेंट लावे तो तुम ढोर में से अर्थात् गाय बैल और भेड़ बकरी में से अपनी भेंट लाओ। -तौ० लैव्य व्यवस्था की पुस्तक प० १ ० १।।२।।

(समीक्षक) अब विचारिये! ईसाइयों का परमेश्वर गाय बैल आदि की भेंट लेने वाला जो कि अपने लिये बलिदान कराने के लिये उपदेश करता है वह बैल गाय आदि पशुओं के लोहू मांस का प्यासा भूखा है वा नहीं? इसी से वह अहिंसक और ईश्वर कोटि में गिना कभी नहीं जा सकता किन्तु मांसाहारी प्रपंची मनुष्य के सदृश है।।५०।।

५१-और वह उस बैल को परमेश्वर के आगे बलि करे और हारून के बेटे याजक लोहू को निकट लावें और लोहू को यज्ञवेदी के चारों ओर जो मण्डली के तम्बू के द्वार पर है, छिड़कें। तब वह उस भेंट के बलिदान की खाल निकाले और उसे टुकड़ा-टुकड़ा करे।। और हारून के बेटे याजक यज्ञवेदी पर आग रक्खें और उस पर लकड़ी चुनें। और हारून के बेटे याजक उसके टुकड़ों को और सिर और चिकनाई को उन लकड़ियों पर जो यज्ञवेदी की आग पर हैं, विधि से धरें।। जिसतें बलिदान की भेंट होवे जो आग से परमेश्वर के सुगन्ध के लिये भेंट किया गया।।

-तौ० लै० व्यवस्था की पुस्तक, प० १। आ० ५। ६।। ७।। ८।।१।।

(समीक्षक) तनिक विचारिये! कि बैल को परमेश्वर के आगे उसके भक्त मारें और वह मरवावे और लोहू को चारों ओर छिड़कें, अग्नि में होम करें, ईश्वर सुगन्ध लेवे, भला यह कसाई के घर से कुछ कमती लीला है? इसी से न बाइबल ईश्वरकृत और न वह जंगली मनुष्य के सदृश लीलाधारी ईश्वर हो सकता है।। ५१।।

५२- फिर परमेश्वर मूसा से यह कह के बोला।। यदि वह अभिषेक किया हुआ याजक लोगों के पाप के समान पाप करे तो वह अपने पाप के कारण जो उसने किया है अपने पाप की भेंट के लिए निसखोट एक बछिया को परमेश्वर के लिये लावे।। और बछिया के शिर पर अपना हाथ रक्खे और बछिया को परमेश्वर के आगे बलि करे।।

-तौ० लै० व्य० प० ४। आ० १। ३।४।।

(समीक्षक) अब देखिये पापों के छुड़ाने के प्रायश्चित्त ! स्वयं पाप करें, गाय आदि उत्तम पशुओं की हत्या करें और परमेश्वर करवावे। धन्य हैं ईसाई लोग कि ऐसी बातों के करने करानेहारे को भी ईश्वर मान कर अपनी मुक्ति आदि की आशा करते हैं!! ।।५२।।

५३ - जब कोई अध्यक्ष पाप करे। तब वह बकरी का निसखोट नर मेम्ना अपनी भेंट के लिये लावे।। और उसे परमेश्वर के आगे बलि करे यह पाप की भेंट है।।

-तौ० लै० प० ४। आ० २२। २३। २४ ।।

(समीक्षक) वाह जी ? वाह? यदि ऐसा है तो इनके अध्यक्ष अर्थात् न्यायाधीश तथा सेनापति आदि पाप करने से क्यों डरते होंगे ? आप तो यथेष्ट पाप करें और प्रायश्चित्त के बदले में गाय, बछिया, बकरे आदि के प्राण लेवें। तभी तो ईसाई लोग किसी पशु वा पक्षी के प्राण लेने में शंकित नहीं होते। सुनो ईसाई लोगो! अब तो इस जंगली मत को छोड़ के सुसभ्य धर्ममय वेदमत को स्वीकार करो कि जिससे तुम्हारा कल्याण हो।। ५३ ।।

५४-और यदि उसे भेड़ लाने की पूंजी न हो तो वह अपने किये हुए अपराध के लिए दो पिंडुकियाँ और कपोत के दो बच्चे परमेश्वर के लिये लावें।। और उसका सिर उसके गले के पास से मरोड़ डाले परन्तु अलग न करे।। उसके किये हुए पाप का प्रायश्चित्त करे और उसके लिये क्षमा किया जायगा।। पर यदि उसे दो पिंडुकियाँ और कपोत के दो बच्चे लाने की पूंजी न हो तो सेर भर चोखा पिसान का दशवाँ हिस्सा पाप की भेंट के लिये लावे' उस पर तेल न डाले। और वह क्षमा किया जायेगा।

-तौ० लै० प० ५। आ० ७। ८। १०। ११ । १३ ।।

(समीक्षक) अब सुनिये! ईसाइयों में पाप करने से कोई धनाढ्य न डरता होगा और न दरिद्र भी, क्योंकि इनके ईश्वर ने पापों का प्रायश्चित्त करना सहज कर रक्खा है। एक यह बात ईसाइयों की बाइबल में बड़ी अद्भुत है कि विना कष्ट किये पाप से छूट जाय। क्योंकि एक तो पाप किया और दूसरे जीवों की हिंसा की और खूब आनन्द से मांस खाया और पाप भी छूट गया। भला! कपोत के बच्चे का गला मरोड़ने से वह बहुत देर तक तड़फता होगा तब भी ईसाइयों को दया नहीं आती। दया क्योंकर आवे! इनके ईश्वर का उपदेश ही हिंसा करने का है। और जब सब पापों का ऐसा प्रायश्चित्त है तो ईसा के विश्वास से पाप छूट जाता है यह बड़ा आडम्बर क्यों करते हैं।। ५४।।

५५-सो उसी बलिदान की खाल उसी याजक की होगी जिसने उसे चढ़ाया।।

इस ईश्वर को धन्य है कि जिसने बछड़ा, भेड़ी और बकरी का बच्चा, कपोत और पिसान (आटे) तक लेने का नियम किया। अद्भुत बात तो यह है कि कपोत के बच्चे ''गरदन मरोड़वा के'' लेता था अर्थात् गर्दन तोड़ने का परिश्रम न करना पड़े। इन सब बातों के देखने से विदित होता है कि जंगलियों में कोई चतुर पुरुष था वह पहाड़ पर जा बैठा और अपने को ईश्वर प्रसिद्ध किया। जंगली अज्ञानी थे, उन्होंने उसी को ईश्वर स्वीकार कर लिया। अपनी युक्तियों से वह पहाड़ पर ही खाने के लिए पशु, पक्षी और अन्नादि मंगा लिया करता था और मौज करता था। उसके दूत फरिश्ते काम किया करते थे। सज्जन लोग विचारें कि कहां तो बाइबल में बछड़ा, भेड़ी, बकरी का बच्चा, कपोत और ''अच्छे'' पिसान का खाने वाला ईश्वर और कहां सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, अजन्मा, निराकार, सर्वशक्तिमान् और न्यायकारी इत्यादि उत्तम गुणयुक्त वेदोक्त ईश्वर ?

और समस्त भोजन की भेंट जो तन्दूर में पकाई जावें और सब जो कड़ाही में अथवा तवे पर सो उसी याजक की होगी।।

-तौ० लै० प० ७। आ० ८। ९।।

क्रमशः अगले अंक में...

दयानन्द-शास्त्रार्थ प्रश्नोत्तर-संग्रह

सत्य वचनों का प्रभाव

(बाबू उमाप्रसाद मुकर्जी दानापुर से प्रश्नोत्तर ३० अक्टूबर, सन् १८७९)

जब स्वामी जी ३० अक्टूबर, सन् १८७९ को दानापुर पधारे तो बाबू उमा प्रसाद मुकर्जी हेडक्लर्क महकमा मैजिस्ट्रेट साहब ने प्रश्न किया--

बाबू--यद्यपि आपका कहना ठीक है परन्तु लोग हठ से न मानें तो आप क्या करेंगे?

स्वामी--हमारा काम इतना ही है कि हमारी कथन को लोग कान में स्थान दें और जब पूर्ण रूप से सुन लेंगे तो वह सूई की भांति भीतर चुभ जायेंगे, निकाले से न निकलेंगे। यदि उनका मित्र या प्यारा एकान्त में पूछेगा तो स्पष्ट कह देंगे कि ठीक है। हठ या लोभ लालच से न कहे तो न कहे।

(लेखराम पृ० ४९८)

हनुमान जयंती की हार्दिक शुभकामनायें

-डॉ. विवेक आर्य

वाल्मीकि रामायण में मर्यादा पुरुषोतम श्री राम चन्द्र जी महाराज के पश्चात् परम बलशाली वीर शिरोमणि हनुमान जी का नाम स्मरण किया जाता है। हनुमान जी का जब हम चित्र देखते हैं तो उसमें उन्हें एक बन्दर के रूप में चित्रित किया गया है जिनके पूंछ भी लगी हुई है।इस चित्र को देखकर हमारे मन में अनेक प्रश्न भी उठते हैं जैसे-

क्या हनुमान जी वास्तव में बन्दर थे? क्या वाकई में उनके पूंछ लगी हुई थी ?

इस प्रश्न का उत्तर इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्यूंकि अज्ञानी लोग वीर हनुमान का नाम लेकर परिहास करने का असफल प्रयास करते रहते है। आईये इन प्रश्नों का उत्तर वाल्मीकि रामायण से ही प्राप्त करते है।

१. प्रथम "वानर" शब्द पर विचार करते है। सामान्य रूप से हम "वानर" शब्द से यह अभिप्रेत कर लेते है कि वानर का अर्थ होता है ''बन्दर'' परन्तु अगर इस शब्द का विश्लेषण करे तो वानर शब्द का अर्थ होता है वन में उत्पन्न होने वाले अन्न को ग्रहण करने वाला। जैसे पर्वत अर्थात गिरि में रहने वाले और वहाँ का अन्न ग्रहण करने वाले को गिरिजन कहते है। उसी प्रकार वन में रहने वाले को वानर कहते है। वानर शब्द से किसी योनि विशेष, जाति , प्रजाति अथवा उपजाति का बोध नहीं होता।

२. सुग्रीव, बालि आदि का जो चित्र हम देखते है उसमें उनकी पूंछ लगी हुई दिखाई देती हैं। परन्तु उनकी स्त्रियों के कोई पूंछ नहीं होती? नर-मादा का ऐसा भेद संसार में किसी भी वर्ग में देखने को नहीं मिलता। इसलिए यह स्पष्ट होता हैं की हनुमान आदि के पूंछ होना केवल एक चित्रकार की कल्पना मात्र है।

३. किष्किन्धा कांड (३/२८-३२) में जब श्री रामचंद्र जी महाराज की पहली बार ऋष्यमूक पर्वत पर हनुमान से भेंट हुई तब दोनों में परस्पर बातचीत के पश्चात रामचंद्र जी लक्ष्मण से बोले-

न अनृ ऋग्वेद विनीतस्य
न अ यजुर्वेद धारिणः द्य
न अ-साम वेद विदुषः शक्यम् एवम् विभाषितुम् द्यद्य ४/३/२८

अर्थात-

''ऋग्वेद के अध्ययन से अनभिज्ञ और यजुर्वेद का जिसको बोध नहीं है तथा जिसने सामवेद का अध्ययन नहीं किया है, वह व्यक्ति इस प्रकार परिष्कृत बातें नहीं कर सकता। निश्चय ही इन्होनें सम्पूर्ण व्याकरण का अनेक बार अभ्यास किया है, क्यूंकि इतने समय तक बोलने में इन्होनें किसी भी अशुद्ध शब्द का उच्चारण नहीं किया है। संस्कार संपन्न, शास्त्रीय पद्यति से उच्चारण की हुई इनकी वाणी हृदय को हर्षित कर देती है"।

४. सुंदर कांड (३०/१८-२०) में जब हनुमान अशोक वाटिका में राक्षसियों के बीच में बैठी हुई सीता को अपना परिचय देने से पहले हनुमान जी सोचते है-

''यदि द्विजाति (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) के समान परिमार्जित संस्कृत भाषा का प्रयोग करूँगा तो सीता मुझे रावण समझकर भय से संत्रस्त हो जाएगी। मेरे इस वनवासी रूप को देखकर तथा नागरिक संस्कृत को सुनकर पहले ही राक्षसों से डरी हुई यह सीता और भयभीत हो जाएगी। मुझको कामरूपी रावण समझकर भयातुर विशालाक्षी सीता कोलाहल आरंभ कर देगी। इसलिए मैं सामान्य नागरिक के समान परिमार्जित भाषा का प्रयोग करूँगा।"

इस प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं की हनुमान जी चारों वेद ,व्याकरण और संस्कृत सहित अनेक भाषायों के ज्ञाता भी थे।

५. हनुमान जी के अतिरिक्त अन्य वानर जैसे की बालि पुत्र अंगद का भी वर्णन वाल्मीकि रामायण में संसार के श्रेष्ठ महापुरुष के रूप में किष्किन्धा कांड ५४ध२ में हुआ है। हनुमान बालि पुत्र अंगद को अष्टांग बुद्धि से सम्पन्न, चार प्रकार के बल से युक्त और राजनीति के चौदह गुणों से युक्त मानते थे।

बुद्धि के यह आठ अंग हैं- सुनने की इच्छा, सुनना, सुनकर धारण करना, ऊहापोह करना, अर्थ या तात्पर्य को ठीक ठीक समझना, विज्ञान व तत्वज्ञान।

चार प्रकार के बल हैं- साम , दाम, दंड और भेद।

राजनीति के चौदह गुण हैं- देशकाल का ज्ञान, दृढ़ता, कष्टसहिष्णुता, सर्वविज्ञानता, दक्षता, उत्साह, मंत्रगुप्ति, एकवाक्यता, शूरता, भक्तिज्ञान, कृतज्ञता, शरणागत वत्सलता, अधर्म के प्रति क्रोध और गंभीरता।

भला इतने गुणों से सुशोभित अंगद बन्दर कहाँ से हो सकते है?

६. एक शंका हमारे समक्ष आती है कि क्या हनुमान जी उड़ कर अपनी पुंछ की सहायता से समुद्र पार कर लंका में गये थे?

हनुमान जी के विषय में यह भ्रान्ति अनेक बार सामने आती है कि वह उड़ कर समुद्र कैसे पार कर गए ? क्यूंकि मनुष्य द्वारा उड़ना संभव नहीं है? सत्य यह है कि हनुमान जी ने उड़ कर नहीं अपितु तैर कर समुद्र को पार किया था। रामायण में किष्किन्धा कांड के अंत में यह विवरण स्पष्ट रूप से दिया गया है। सम्पाती के वचन सुनकर अंगदादि सब वीर समुद्र के तट पर पहुँचे, तो समुद्र के वेग और बल को देखकर सबके मन खिन्न हो गये। अंगद ने सौ योजन के समुद्र को पार करने का आवाहन किया। युवराज अंगद के सन्देश को सुनकर वानरों ने १०० योजन के समुद्र को पार करने में असमर्थता दिखाई। तब अंगद ने कहा कि मैं १०० योजन तैरने में समर्थ हूँ। पर वापिस आने कि मुझमे शक्ति नहीं है। तब जाम्बवान ने कहा आप हमारे स्वामी है आपको हम जाने नहीं देंगे। इस पर अंगद ने कहा यदि मैं न जाऊँ और न कोई और पुरुष जाये,तो फिर हम सबको मर जाना ही अच्छा है। क्यूंकि कार्य किये बिना, सुग्रीव के राज्य में जाना भी मरना ही है।

अंगद के इस साहस भरे वाक्य को सुनकर जाम्बवान बोले-राजन मैं अभी उस वीर को प्रेरणा देता हूँ, जो इस कार्य को सिद्ध करने में सक्षम है। इसके पश्चात हनुमान को उनकी शक्तियों का स्मरण करा प्रेरित किया गया। हनुमान जी बोले-''मैं इस सारे समुद्र को बाहुबल से तर सकता हूँ और मेरे ऊरु, जंघा के वेग से उठा हुआ समुद्र जल आकाश को चढ़ते हुए के तुल्य होगा। मैं पार जाकर उधर की पृथ्वी पर पाँव धरे बिना, अर्थात विश्राम करे बिना फिर उसी वेग से इस ओर आ सकता हूँ। मैं जब समुद्र में जाऊँगा, अवश्य खिन्न हुए लता, वृक्ष आकाश को उड़ेंगे, अर्थात अन्य स्थान का आश्रय ढूंढेंगे।'' (श्लोक किष्किन्धा काण्ड ६७ध२६)

इसके पश्चात हनुमान समुद्र में उतरने के लिए एक पर्वत के शिखर पर चढ़ गये। उनके वेग से उस समय प्रतीत होता था कि पर्वत काँप रहा है। हनुमान जी के समुद्र में प्रविष्ट होते ही समुद्र में ऐसा शब्द हुआ जैसे कि मेघ गर्जन से होता है। और हनुमान जी ने वेग से उस महासमुद्र को देखते ही देखते पार कर लिया।

हिंदी भाषा में एक प्रसिद्द मुहावरा है'' हवा से बातें करना'' अर्थात अत्यंत वेग से जो चलता या तैरता या गति करता है, उसे हवा से बातें करना कहते है। हनुमान जी ने इतने वेग से समुद्र को पार किया कि उपमा में हवा से बातें करना परिवर्तित होकर हवा में उड़ना हो गया। इसी से यह भ्रान्ति हुई कि हनुमान जी हवा में उड़ते थे। जबकि सत्य यह है कि वह ब्रह्मचर्य के बल पर हवा के समान तेज गति से कार्य करते थे।

अशोक वाटिका में पकड़े जाने पर जब हनुमान जी को रावण के समक्ष प्रस्तुत किया गया तो

उनका उपहास करने की मंशा से रावण के सैनिकों ने उन्हें जंगली जानवर जैसा दिखाने के लिए पुंछ लगाकर उपहास करने का स्वांग किया। मूर्खों से इससे अधिक कुछ अपेक्षित भी नहीं हैं। हनुमान जी ने भी इस उपहास का समुचित प्रतिउत्तर दिया। उसी आग लगी पुंछ से पूरी लंका को भस्म कर रावण को पाठ सिखाया।

७. अंगद की माता तारा के विषय में मरते समय किष्किन्धा कांड १६ध१२ में बालि ने कहा था कि-

"सुषेन की पुत्री यह तारा सूक्षम विषयों के निर्णय करने तथा नाना प्रकार के उत्पातों के चिन्हों को समझने में सर्वथा निपुण है। जिस कार्य को यह अच्छा बताए, उसे निःसंग होकर करना। तारा की किसी सम्मति का परिणाम अन्यथा नहीं होता।"

ऐसे गुण विशेष मनुष्यों में ही संभव है।

८. किष्किन्धा कांड (२५/३०) में बालि के अंतिम संस्कार के समय सुग्रीव ने आज्ञा दी- मेरे ज्येष्ठ बन्धु आर्य का संस्कार राजकीय नियम के अनुसार शास्त्र अनुकूल किया जाये। किष्किन्धा कांड (२६/१०) में सुग्रीव का राजतिलक हवन और मन्त्रादि के साथ विद्वानों ने किया।

क्या बंदरों में शास्त्रीय विधि से संस्कार होता हैं?

९. जहाँ तक जटायु का प्रश्न है, वह गिद्ध नामक पक्षी नहीं था। जिस समय रावण सीता का अपहरण कर उसे ले जा रहा था। तब जटायु को देख कर सीता ने कहाँ –

जटायो पश्य मम आर्य ह्रियमाणम् अनाथ वत्।

अनेन राक्षसेद्रेण करुणम् पाप कर्मणा।। अरण्यक ४९/३८

हे आर्य जटायु ! यह पापी राक्षस पति रावण मुझे अनाथ की भान्ति उठाये ले जा रहा है।

कथम् तत् चन्द्र संकाशम् मुखम् आसीत् मनोहरम्।

सीतया कानि च उक्तानि तस्मिन् काले द्विजोत्तम।। ६८/६

अर्थात -यहाँ जटायु को आर्य और द्विज कहा गया है। यह शब्द किसी पशु-पक्षी के सम्बोधन में नहीं कहे जाते।

रावण को अपना परिचय देते हुए जटायु ने कहा -

जटायुः नाम नाम्ना अहम् गृध्र राजो महाबलः । अरण्यक ५०/४

अर्थात- मैं गृध कूट का भूतपूर्व राजा हूँ और मेरा नाम जटायु है।

यह भी निश्चित हैं की पशु-पक्षी किसी राज्य का राजा नहीं हो सकते। इन सभी प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं कि जटायु पक्षी नहीं था, अपितु एक मनुष्य था। जो अपनी वृद्धावस्था में जंगल में वास कर रहा था।

१०. जहाँ तक जाम्बवान के रीछ होने का प्रश्न है। यह भी एक भ्रान्ति है। रामायण में वर्णन मिलता है कि जब युद्ध में राम-लक्ष्मण मेघनाद के ब्रहमास्त्र से घायल हो गए थे। तब किसी को भी उस संकट से बाहर निकलने का उपाय नहीं सूझ रहा था। तब विभीषण और हनुमान जाम्बवान के पास परामर्श लेने गये। तब जाम्बवान ने हनुमान को हिमालय जाकर ऋषभ नामक पर्वत और कैलाश नामक पर्वत से संजीवनी नामक औषधि लाने को कहा था।

इसका सन्दर्भ रामायण के युद्ध कांड सर्ग ७४/३१-३४ में मिलता है।

आप्त काल में बुद्धिमान और विद्वान जनों से संकट का हल पूछा जाता है। जैसे युद्धकाल में ऐसा निर्णय किसी अत्यंत बुद्धिवान और विचारवान व्यक्ति से पूछा जाता है। पशु-पक्षी आदि से ऐसे संकट काल में उपाय पूछना सर्वप्रथम तो संभव ही नहीं हैं। दूसरे बुद्धि से परे की बात है। इसलिए स्वीकार्य नहीं है।

इसलिए जाम्बवान का रीछ जैसा पशु नहीं अपितु महाविद्वान होना ही संभव है।

इन सब वर्णन और विवरणों को बुद्धिपूर्वक पढ़ने से यह सिद्ध होता है कि हनुमान, बालि, सुग्रीव आदि विद्वान एवं बुद्धिमान मनुष्य थे। उन्हें बन्दर आदि मानना केवल मात्र एक कल्पना है और अपने श्रेष्ठ महापुरुषों के विषय में असत्य कथन है।

महर्षि दयानंद से पूर्व के वेदभाष्यकार एवं महर्षि दयानंद के पश्चात के वेद भाष्यकारों की सूची

-ओमेद्र आर्य

महर्षि स्वामी दयानंद से पूर्व के जिन विद्वानों के जो वेद भाष्य प्राप्त होते हैं , वह २६ भाष्यकार हैं। वह कब हुए किन-किन वेदों का उन्होंने भाष्य किया यह क्रम से मैं यहां उल्लेख कर रहा हूं ।

किंतु महर्षि दयानंद से पूर्व के और महाभारत के बाद के जो मध्य काल के भाष्यकारों का जो वेद भाष्य प्राप्त होता है।

वह ऋषियों की परंपरा के विरुद्ध है वेद के वास्तविक अर्थ के विरुद्ध है , महर्षि दयानंद से पूर्व के भाष्यकारों की सूची इस प्रकार है:-

(१) देव स्वामी -:-यह विक्रमी संवत से पूर्व हुए थे इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(२) स्कंद स्वामी-:- इनका जन्म -६३०-ईस्वी में हुआ था, यह बल्लभी गुजरात के निवासी थे इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(३) नारायण -:-इनका जन्म -६३०- ईस्वी में हुआ था, इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(४) उद्गीथ-:- इनका जन्म -६८०-ईस्वी के आसपास हुआ था, इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था। जब इन्होंने वेदभाष्य किया था तब यह वानप्रस्थ में थे।

(५) हस्तमालक-:- इनका जन्म -७००- ईस्वी में हुआ था, इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(६) हरिस्वामी-:- इनका जन्म -७३८ -ईस्वी में हुआ था, इन्होंने यजुर्वेद का भाष्य से किया था।

(७) वेंकट माधव -:- इनका जन्म -१०५० -ईस्वी में हुआ था, यह चोल प्रदेश में कावेरी नदी के बाएं किनारे पर स्थित गमन ग्राम के निवासी थे, इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(८) उव्वट -:- इनका जन्म- १०५०- ईस्वी में हुआ था, यह उज्जैन के निवासी थे, इन्होंने ऋग्वेद तथा यजुर्वेद का भाष्य किया था

(९) लक्ष्मण-:- इनका जन्म -११००- ईस्वी में हुआ था इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(१०) आनंद तीर्थ इन्हें माधवाचार्य -:- भी कहते हैं,

इनका जन्म -११९८- ईस्वी में हुआ था ,इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था, इनकी मृत्यु- १२७८ -ईस्वी में हुई थी।

(११)भट्टभास्कर -:- इनका जन्म -११-वी शताब्दी में दक्षिण भारत में हुआ था, इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(१२) आत्मानंद -:-इनका जन्म -१२५० -ईस्वी में हुआ था, इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(१३)धनुषक्याजवा-:- इनका जन्म -१३-वी शताब्दी में हुआ था, इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(१४) गुण विष्णु -:- इनका जन्म -१३-वी शताब्दी में हुआ था उन्होंने सामवेद का भाष्य किया था।

(१५) भरत स्वामी-:- इन्हें सरयषा भी कहते हैं, इनका जन्म विक्रमी संवत- १३७२- में हुआ था, यह विजय नगर के निवासी थे, इन्होंने सामवेद का भाष्य किया था, इनकी मृत्यु- १४४४- विक्रमी संवत को हुई थी।

(१६) गौराधार -:-इनका जन्म -१३०० -ईस्वी में हुआ था,

यह कश्मीर के निवासी थे, इन्होंने यजुर्वेद का भाष्य किया था।

(१७)सायण आचार्य-:- इनका जन्म-१३१५- ईस्वी में हुआ था, यह विजय नगर के निवासी थे, इन्होंने ऋग्वेद तथा अथर्ववेद का भाष्य किया था, इनकी मृत्यु-१३८७- ईस्वी में हुई थी।

(१८)मुद्गल -:-इनका जन्म -१४१३- ईस्वी में हुआ था इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(१९)रावण-:- इनका जन्म -१४५०-ईस्वी में हुआ था, इन्होंने ऋग्वेद का तथा यजुर्वेद का भाष्य से किया था।

(२०) शौनक-:- इन्होंने यजुर्वेद का भाष्य किया था , इनकी जन्मतिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता है।

(२१) महास्वामी-:- इनका जन्म -१४-वी शताब्दी में हुआ था, इन्होंने साम वेद का भाष्य किया था।

(२२) सोभाकर भट्ट -:-इनका जन्म -१४०८-ईसवी में हुआ था, इन्होंने सामवेद का भाष्य किया था।

(२३) चतुर्वेद स्वामी-:- इनका जन्म-१५-वी शताब्दी में हुआ था, इन्होंने ऋग्वेद का भाष्य किया था।

(२४) सूर्य देवाज्ञा-:- इनका जन्म -१५३०-ईस्वी में हुआ था, इन्होंने सामवेद का भाष्य किया था।

(२५) माधव -:-इनका जन्म विक्रमी संवत की -७-वी शताब्दी में हुआ था, इन्होंने सामवेद का भाष्य किया था।

(२६)महीधर -:-इनका जन्म काशी बनारस में -१६००- ईस्वी में हुआ था इन्होंने यजुर्वेद का भाष्य किया था।

(२७) महर्षि स्वामी दयानंद-:- इनका जन्म-१८२५-ईस्वी में हुआ था ,इन्होंने यजुर्वेद तथा ऋग्वेद मंडल /७/सूक्त /६१/मंत्र /२/ तक का भाष्य किया था इनकी मृत्यु -१८८३- ईस्वी में हुई थी, यह गुजरात काठियावाड़ के टंकारा ग्राम के निवासी थे।)

(देव स्वामी से लेकर महर्षि दयानंद तक -२७-वेदभाष्यकारों का संदर्भ ग्रंथ:-विश्व गुरु स्वामी दयानंद का जीवन चरित एवं उनकी शिक्षाएं (life of Dayanand Saraswati wild teacher)

::महर्षि दयानंद के बाद के वेद भाष्यकार::

(२८) पंडित तुलसीराम आचार्य -:- इनका जन्म-१८६७- ईस्वी को हुआ और इनकी मृत्यु-१९१५- ईस्वी को हुई यह महर्षि दयानंद के सहपाठी युगल किशोर के शिष्य थे, इन्होंने सामवेद का भाष्य किया था और ऋग्वेद के मंडल/७/सूक्त/६१/मन्त्र/२/से आगे का कुछ भाष्य भी किया था।

(२९)क्षेमकरण दास त्रिवेदी-:- इनका जन्म-१८४८-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु -१९३९-ईस्वी को हुई इन्होंने सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्त होने के बाद संस्कृत का अध्ययन करके अथर्ववेद का भाष्य किया था।

(३०) पंडित आर्यमुनि महामहोपाध्याय :-इनका जन्म-१८६२-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु १९४७ ईस्वी के आसपास हुई, इन्होंने ऋग्वेद के मंडल/७/सूक्त६६१/मन्त्र /३/से मंडल/९/तक भाष्य किया था।

(३१) पंडित प्रोफेसर राजाराम शास्त्री :-इनका जन्म-१८६७-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु-१९४८-ईस्वी को हुई, इन्होंने अथर्ववेद का भाष्य किया था।

(३२) श्रीपाद दामोदर सातवलेकर -:- इनका जन्म -१८६७- ईस्वी को हुआ और इनकी मृत्यु-१९६९- ईस्वी को हुई यह कुछ समय तक गुरुकुल कांगड़ी में आचार्य पद पर रहे और इन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद ,सामवेद ,अथर्ववेद चारों वेदों का भाष्य किया था।

(३३) पं वैद्यनाथ शास्त्री -:- इनका जन्म -१९१५- ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु -१९८८-ईस्वी को हुई इन्होंने ऋग्वेद के मंडल नौ वा दश तथा सामवेद का भाष्य किया था और अथर्ववेद का अंग्रेजी अनुवाद भी किया था।

(३५) आचार्य जयदेव शर्मा विद्यालंकार मीमांसातीर्थ -:- इनका जन्म-१८९२- ईस्वी को हुआ और इनकी मृत्यु-१९६१- ईस्वी को हुई यह गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक थे तथा गुरुकुल कांगड़ी में ही वेदाचार्य रहे इन्होंने ऋग्वेद,यजुर्वेद ,सामवेद, अथर्ववेद, चारों वेदों का भाष्य किया था।

(३५) स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तंड -: इनका जन्म -१८९४-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु-१९७७- ईस्वी को हुई यह महर्षि दयानंद के सहपाठी वनमाली लाल के शिष्य थे और यह गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य भी रहे, इन्होंने सामवेद का संपूर्ण भाष्य वा अथर्ववेद के प्रथम तीन काण्ड तथा ऋग्वेद मण्डल-७- सुक्त-६१- मन्त्र-३-से सुक्त-६८-तक व मंडल-१०- का भाष्य किया था यजुर्वेद के दश अध्यायों का अन्वयार्थ किया था।

(३६)पंडित विश्वनाथ विद्यामार्तण्ड -: इनका जन्म -१८९८- ईस्वी को हुआ और इनकी मृत्यु-१९९२- ईस्वी को हुई गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक थे तथा आप गुरुकुल कांगड़ी के वेदाचार्य इन्होंने, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अथर्ववेद, चारों वेदों का भाष्य किया था।

(३७) पंडित हरिशरण सिद्धांतालंकार-:-इनका जन्म-१९०१-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु-१९९१-ईस्वी को हुई यह गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक थे तथा गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य थे, इन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद ,अथर्ववेद , चारों वेदों का भाष्य किया था।

(३८) पंडित रामनाथ वेदालंकार:- इनका जन्म-१९१४-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु -२०१४-ईस्वी को हुई यह गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक थे तथा गुरुकुलकांगड़ी के वेदाचार्य थे इन्होंने सामवेद का भाष्य किया था।

(वेद अनुवादक:-

(३९) लाला देवीचन्द एम०ए० इनका जन्म -१८८०-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु-१९६५- ईस्वी को हुई इन्होनें यजुर्वेद और सामवेद का अंग्रेजी में अनुवाद किया था।

(४०) स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती-: यह पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय के पुत्र थे, इनका जन्म ईस्वी -१९०५- को हुआ था और इनकी मृत्यु -१९९५- ईस्वी को हूंई इन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद ,अथर्ववेद, चारों वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद किया था।

(४१) मनक्कल रामस्वामी जम्बूनाथन:-इनका जन्म -१८९६-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु -१९७८-ईस्वी को हुई इन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, चारों वेदों का तमिल भाषा में अनुवाद किया था।

(४२) पंडित आशुराम आर्य :-इनका जन्म-१९१३-ईस्वी को हुआ था, इन्होंने यजुर्वेद के प्रथम अध्याय से चतुर्थ अध्याय तक, तथा ऋग्वेद के प्रथम मंडल के-१७-वें सूक्त तक, और सामवेद के पूर्वार्चिक वा महानाम्नी ऋचा तक वेदों का उर्दू में अनुवाद किया था।

(४३) पंडित प्रियदर्शन सिद्धांतभूषण:- इनका जन्म-१९१०-ईस्वी को हुआ था, इन्होंने यजुर्वेद का बंगला भाषा में अनुवाद किया था।

(४४) डॉ तुलसीराम:-इनका जन्म-१९२४- ईस्वी को हुआ था इन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, चारों वेदों का अंग्रेजी में अनुवाद किया है।

(४५)) श्री दयाल मावजीभाई परमार(दयाल मुनि):- इनका जन्म महर्षि दयानंद की जन्मभूमि टंकारा ग्राम में ईस्वी -१९३४-को हुआ था, इन्होंने ऋग्वेद ,यजुर्वेद ,सामवेद, अथर्ववेद, चारों वेदों का गुजराती में अनुवाद किया है।।

(४६) पंडित सुधाकर चतुर्वेदी जी:- का जन्म -१९०१-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु २०२०ईस्वी में हुई थी, इन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद,अथर्ववेद, चारों वेदों का कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया था।

(४७)पंडित शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ:- इनका जन्म -१८६८-ईस्वी को हुआ, इन्होंने ऋग्वेद मण्डल-७ सुक्त-६१/के मंत्र-३/से मण्डल-८-के-२९-वें सुक्त तक भाष्य क्या था।

(४८) स्वामी शुक्लानंद सरस्वती :-इन्होंने ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के/ १से - १३वें -सुक्त तक का हिंदी भाष्य किया था।

(४९) (पंडित बुद्धदेव वेदालंकार)स्वामी समर्पणानंद :- उनका जन्म -१८९५-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु-१९६९-ईस्वी को हुई थी ,इन्होंने अथर्ववेद के चतुर्थ कांड का भाष्य क्या था।

(५०) श्री कृष्ण गुप्त:- इनका जन्म-१८९७-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु-१९७३-ईस्वी को हुई थी, इन्होंने सामवेद का पद्यानुवाद किया था।

(५१) पंडित हरीशचंद्र विद्यालंकार इनका जन्म-१९०३-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु-१९७४-ईस्वी को हुई थी, इन्होंने सामवेद का हिंदी भाष्य किया था।

(५२) पंडित विरेन्द्र शास्त्री (वीरेंद्र मुनि) :-इनका जन्म-१९१५-ईस्वी को हुआ था, इन्होंने समवेद का हिंदी अनुवाद किया था।

(५३) स्वामी जगदीश्वरानंद इनका जन्म-१९३१-ईस्वी को हुआ था और इनकी मृत्यु २००९ ईस्वी को हुई थी इन्होंने सामवेद का भाष्य किया था।

(५४) वाचस्पति डॉ मर्रि कृष्णरेड्डी:- का जन्म-१९६८-ईस्वी को तेलंगाना में हुआ था , इन्होंने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, का तेलुगु भाषा में अनुवाद किया है।

हुतात्मा महाशय राजपाल की बलिदान गाथा एवं रंगीला रसूल

६ अप्रैल बलिदान दिवस पर प्रकाशित

-डॉ. विवेक आर्य

सन् १९२३ में मुसलमानों की ओर से दो पुस्तकें ''१९वीं सदी का महर्षि'' और कृष्णतेरीगीताजलानी पड़ेगी प्रकाशित हुई थी।

पहली पुस्तक में आर्यसमाज का संस्थापक स्वामीदयानंद का सत्यार्थ प्रकाश के १४ सम्मुलास में कुरान की समीक्षा से खीज कर उनके विरुद्ध आपत्तिजनक एवं घिनौना चित्रण प्रकाशित किया था जबकि दूसरी पुस्तक में श्रीकृष्ण जी महाराज के पवित्र चरित्र पर कीचड़ उछाला गया था।

उस दौर में विधर्मियों की ऐसी शरारतें चलती ही रहती थी पर धर्म प्रेमी सज्जन उनका प्रतिकार उन्ही के तरीके से करते थे।

महाशय राजपाल ने स्वामी दयानंद और श्री कृष्ण जी महाराज के अपमान का प्रतिउत्तर १९२४ में ''रंगीलारसूल'' के नाम से पुस्तक छाप कर दिया.. जिसमे मुहम्मद साहिब की जीवनी व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत की गयी थी।

यह पुस्तक उर्दू में थी और इसमें सभी घटनाएँ इतिहास सम्मत और प्रमाणिक थी।

पुस्तक में लेखक के नाम के स्थान पर दूध का दूध और पानी का पानी छपा था। वास्तव में इस पुस्तक के रुलेखकपंडितचमूपतिजीथे जो की आर्यसमाज के श्रेष्ठ विद्वान् थे।

वे महाशय राजपाल के अभिन्न मित्र थे।

मुसलमानों की ओर से संभावित प्रतिक्रिया के कारण चमूपति जी इस पुस्तक में अपना नाम नहीं देना चाहते थे। इसलिए उन्होंने महाशय राजपाल से वचन ले लिया की चाहे कुछ भी हो जाये, कितनी भी विकट स्थिति क्यूँ न आ जाये वे किसी को भी पुस्तक के लेखक का नाम नहीं बतायेगे।

महाशय राजपाल ने अपने वचन की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर की पर पंडित चमूपति सरीखे विद्वान् पर आंच तक न आने दी।

१९२४ में छपी रंगीला रसूल बिकती रही पर किसी ने उसके विरुद्ध शोर न मचाया फिर महात्मा गाँधी ने अपनी मुस्लिम परस्त नीति में इस पुस्तक के विरुद्ध एक लेख लिखा।

इस पर कट्टरवादी मुसलमानों ने महाशय राजपाल के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया।

सरकार ने उनके विरुद्ध १५३ए धारा के अधीन अभियोग चला दिया। अभियोग चार वर्ष तक चला। राजपाल जी को छोटे न्यायालय ने डेढ़ वर्ष का कारावास तथा १००० रूपये का दंड सुनाया गया। इस फैसले के विरुद्ध अपील करने पर सजा एक वर्ष तक कम कर दी गई।

इसके बाद मामला हाई कोर्ट में गया। कँवर दिलीप सिंह की अदालत ने महाशय राजपाल को दोषमुक्त करार दे दिया। मुसलमान इस निर्णय से भड़क उठे।

खुदाबख्स नामक एक पहलवान मुसलमान ने महाशय जी पर हमला कर दिया जब वे अपनी दुकान पर बैठे थे पर संयोग से आर्य सन्यासी स्वतंत्रानंद जी महाराज एवं स्वामीवेदानन्द जी महाराज वह उपस्थित थे।

उन्होंने घातक को ऐसा कसकर दबोचा की वह छूट न सका। उसे पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया गया, उसे सात साल की सजा हुई।

रविवार ८ अक्टूबर १९२७ को स्वामीसत्यानन्द जी महाराज को महाशय राजपाल समझ कर अब्दुल अजीज नमक एक मतान्ध मुसलमान ने एक हाथ में चाकू ,एक हाथ में उस्तरा लेकर हमला कर दिया। स्वामी जी घायल कर वह भागना ही चाह रहा था की पड़ोस के दूकानदार महाशय नानकचंद जी कपूर ने उसे पकड़ने का प्रयास किया। इस प्रयास में वे भी घायल हो गए तो उनके छोटे भाई लाला चूनीलाल जी जी उसकी ओर लपके। उन्हें भी घायल करते हुए हत्यारा भाग निकला पर उसे चौक अनारकली पर पकड़ लिया गया।...

उसे चौदह वर्ष की सजा हुई ओर तदन्तर तीन वर्ष के लिए शांति की गारंटी का दंड सुनाया गया।

स्वामी सत्यानन्द जी के घाव ठीक होने में करीब डेढ़ महीना लगा।

६ अप्रैल १९२९ को महाशय राजपाल अपनी दुकान पर आराम कर रहे थे। तभी इल्मदीन नामक एक मतान्ध मुसलमान ने महाशय जी की छाती में छुरा घोंप दिया जिससे महाशय जी का तत्काल प्राणांत हो गया।.. हत्यारा अपने जान बचाने के लिए भागा ओर महाशय सीताराम जी के लकड़ी के टाल में घुस गया।

महाशय जी के सपूत विद्यारतन जी ने उसे कस कर पकड़ लिया। पुलिस हत्यारे को पकड़ कर ले गई। देखते ही देखते हजारों लोगो का ताँता वहाँ पर लग गया।

देवता स्वरूप भाई परमानन्द ने अपने सम्पादकीय में लिखा हैं की आर्य समाज के इतिहास में यह अपने ढंग का तीसरा बलिदान हैं।

पहले धर्म वीर लेखराम का बलिदान इसलिए हुआ की वे वैदिक धर्म पर किया जाने वाले प्रत्येक आक्षेप का उत्तर देते थे। उन्होंने कभी भी किसी मत या पंथ के खंडन की कभी पहल नहीं की थी। सदैव उत्तर- प्रति उत्तर देते रहे।

दूसरा बड़ा बलिदान स्वामी श्रद्धानंद जी का था।... उनके बलिदान का कारण यह था की उन्होंने भुलावे में आकर मुसलमान हो गए भाई बहनों को, परिवारों को पुनः हिन्दू धर्म में सम्मिलित करने का आन्दोलन चलाया और इस ढंग से स्वागत किया की आर्य जाति में 'शुद्धि' के लिए एक नया उत्साह पैदा हो गया। विधर्मी इसे न सह सके।

तीसरा बड़ा बलिदान महाशय राजपाल जी का हैं। जिनका बलिदान इसलिए अद्वितीय हैं की उनका जीवन लेने के लिए लगातार तीन आक्रमण किये गए।...

पहलीबार २६ सितम्बर १९२७ को एक व्यक्ति खुदाबक्श ने किया।

दूसरा आक्रमण ८ अक्टूबर को उनकी दुकान पर बैठे हुए स्वामी सत्यानन्द पर एक व्यक्ति अब्दुल अजीज ने किया।

ये दोनों अपराधी अब कारागार में दंड भोग रहे हैं। इसके पश्चात अब डेढ़ वर्ष बीत चूका हैं की एक युवक इल्मदीन, जो न जाने कब से महाशय राजपाल जी के पीछे पड़ा था, एक तीखे छुरे से उनकी हत्या करने में सफल हुआ हैं। जिस छोटी सी पुस्तक लेकर महाशय राजपाल के विरुद्ध भावनाओं को भड़काया गया था, उसे प्रकाशित हुए अब चार वर्ष से अधिक समय बीत चूका हैं।

लाहौर के हिन्दुओं ने यह निर्णय किया की शव का संस्कार अगले दिन किया जाये। पुलिस के मन में निराधार भूत का भय बैठ

गया और डिप्टी कमिश्नर ने रातों रात धारा १४४ लगाकर सरकारी अनुमति के बिना जलुस निकालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। अगले दिन प्रातः सात बजे ही हजारों की संख्या में लोगो का ताँता लग गया...

सब शव यात्रा के जुलुस को शहर के बीच से निकल कर ले जाना चाहते थे पर कमिश्नर इसकी अनुमति नहीं दे रहा था। इससे भीड़ में रोष फैल गया। अधिकारी चिढ गए। अधिकारियों ने लाठी चार्ज की आज्ञा दे दी।

पच्चीस व्यक्ति घायल हो गए।

अधिकारियों से पुनः बातचीत हुई। पुलिस ने कहाँ की लोगों को अपने घरों को जाने दे दिया जाये। इतने में पुलिस ने फिर से लाठी चार्ज कर दिया। १५० के करीब व्यक्ति घायल हो गए पर भीड़ तस से मस न हुई। शव अस्पताल में ही रखा रहा। दुसरे दिन सरकार एवं आर्यसमाज के नेताओं के बीच एक समझोता हुआ जिसके तहत शव को मुख्य बाजारों से धूम धाम से ले जाया गया। हिंदुओं ने बड़ी श्रद्धा से अपने मकानों से पुष्प वर्षा करी।

ठीक पौने बारह बजे हुतात्मा की नश्वर देह को महात्मा हंसराज जी ने अग्नि दी। महाशय जी के ज्येष्ठ पुत्र प्राणनाथ जी तब केवल ११ वर्ष के थे पर आर्य नेताओं ने निर्णय लिया की समस्त आर्य हिन्दू समाज के प्रतिनिधि के रूप में महात्मा हंसराज मुखाग्नि दे। जब दाहकर्म हो गया तो अपार समूह शांत होकर बैठ गया। ईश्वर प्रार्थना श्री स्वामी स्वतंत्रानंद जी ने करवाई।

प्रार्थना की समाप्ति पर भीड़ में से एकदम एक देवी उठी। उनकी गोद में एक छोटा बालक था। यह देवी हुतात्मा राजपाल की धर्मनिष्ठा साध्वी धर्मपत्नी थी। उन्होंने कहा की मुझे अपने पति के इस प्रकार मारे जाने का दुःख अवश्य हैं पर साथ ही उनके धर्म की बलिवेदी पर बलिदान देने का अभिमान भी हैं। वे मारकर अपना नाम अमर कर गए।

पंजाब के सुप्रसिद्ध पत्रकार व कवि नानकचंद जी 'नाज' ने तब एक कविता महाशय राजपाल के बलिदान का यथार्थ चित्रण में लिखी थी-

फख्र से सर उनके ऊँचे आसमान तक तक हो गए, हिंदुयों ने जब अर्थी उठाई राजपाल।

फूल बरसाए शहीदों ने तेरी अर्थी पे खूब, देवताओं ने तेरी जय जय बुलाई राजपाल।

हो हर इक हिन्दू को तेरी ही तरह दुनिया नसीब जिस तरह तूने छुरी सिने पै खाई राजपाल।

तेरे कातिल पर न क्यूँ इस्लाम भेजे लानतें, जब मुजम्मत कर रही हैं इक खुदाई राजपाल।

मैंने क्या देखा की लाखों राजपाल उठने लगे दोस्तों ने लाश तेरी जब जलाई राजपाल।

शोक समाचार

अंतरराष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा गुजरात के पूर्व आचार्य विद्या देव जी का देहांत दिनांक १० अप्रैल २०२३ को प्रातः जेम्स हॉस्पिटल कासना ग्रेटर नोएडा में अकस्मात हो गया।

स्व. आचार्य विद्या देव जी का अंतिम संस्कार गुरुकुल मुर्शदपुर ग्रेटर नोएडा में परिजनों व सैकड़ों आर्य जनों की उपस्थिति में किया गया।

● महर्षि दयानंद आर्ष गुरुकुल कोटरा रसलपुर कला बदायूं के कुलपति आचार्य रामचंद्र शास्त्री जी की माता जी श्रीमती राममूर्ति देवी का स्वर्गवास दिनांक ७ अप्रैल २०२३ को दिल्ली में हो गया।

स्व. माता जी का अंतिम संस्कार दिनांक ८ अप्रैल २०२३ को ग्राम जरीफ नगर बदायूं में वैदिक रीति से परिवार व परिजनों की उपस्थिति में किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेंद्रपाल वर्मा व समस्त पदाधिकारियों ने दिवंगत आत्माओं को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए ईश्वर से उनकी सद्गति की प्रार्थना की है तथा परिवार को धैर्य व शांति प्रदान करने की कामना की है।

पृष्ठ....१ का शेष

विभिन्नताओं के कारण राष्ट्र और धरती की अखण्डता पर आंच आए।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्।

यह धरती नाना प्रकार की बोलियों को बोलने वालों तथा नाना पेशों से जीविका चलाने वाले लोगों को उसी प्रकार धारण करती है, मानो वे एक ही घर के लोग हों। भाषा तथा व्यवसायगत भेद पृथ्वी के नागरिकों में भिन्नता तथा अनेकता नहीं लाते। महर्षि स्वामी दयानन्द ने वेद प्रतिपादित इसी तथ्य को हृदयंगम किया था और पृथ्वी के समस्त नागरिकों को यही सन्देश अपने उपदेशों और शिक्षाओं के माध्यम से दिया था।

राष्ट्र भूभाग ही नहीं, निवासी भी- राष्ट्र की परिभाषा अनेक प्रकार से की गई है। किन्तु अधिकांश विचारकों की राय में राष्ट्र उस भौगोलिक इकाई का नाम है, जिसकी सीमाएं बहुत कुछ प्राकृतिक होती हैं तथा जिसके निवासियों के इतिहास, संस्कृति, परम्परा, जीवनदर्शन तथा आचार-व्यवहार में एकरूपता दिखाई देती है। यों तो कोई भी राष्ट्र धरती का एक टुकड़ा ही होता है, जिसमें नदी, पर्वत, नाले, झरने, वन, मैदान आदि के अतिरिक्त मनुष्यों द्वारा निर्मित बस्तियाँ भी होती हैं, किन्तु उस भूभाग की सांस्कृतिक एकता ही वह मूलभूत तत्व है, जो भूखण्ड को राष्ट्र की संज्ञा प्रदान करता है। इस प्रसंग में पृथ्वी सूक्त का निम्न मन्त्र मननीय है-

शिला भूमिरश्मा पांसुः सा भूमिः
संधृता धृता।

अर्थात् प्रत्यक्षतया तो यह धरती विभिन्न चट्टानों, मिट्टी के कणों, प्रस्तर खण्डों तथा बालू रेत का ही समष्टि रूप है, किन्तु जब यही भूखण्ड देशवासियों द्वारा संस्कृत बनाकर सम्यक्तया धारण किया जाता है, तो उसके साथ देश की गौरवमयी संस्कृति तथा इतिहास के गरिमामय प्रसंग जुड़ जाते हैं। तब प्रस्तरमयी शिलाओं तथा धूल के कणों वाली यह धरती हमारे लिए वंदनीय तथा रक्षणीय राष्ट्र बन जाती है। इसी वैदिक तथ्य का अनुभव कर ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में सर्वत्र स्वदेश आर्यावर्त का कीर्तिगान किया है तथा इसके विगत ऐश्वर्य, वैभव तथा गौरव का उन्मुक्त कंठ से गान किया है।

यह स्पष्ट है कि राष्ट्र की सुस्पष्ट धारणा से पुराकालीन आर्य लोग सर्वथा परिचित थे। इस प्रसंग में यह लिखना भी आवश्यक है कि हमारे विदेशी शासकों ने यह तथ्य कभी स्वीकार नहीं किया कि भारत सुसंगठित तथा सांस्कृतिक एकता के सूत्र में पिरोया एक राष्ट्र है। इस विचारधारा को देश के नागरिकों में प्रचारित करने के पीछे उनका एक गुप्त कार्यक्रम था। उनके निहित स्वार्थ थे। वे नहीं चाहते थे कि भारत के निवासी अपनी राष्ट्रीय अस्मिता को पहचानें तथा एकता के सूत्र में बंधकर स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सामूहिक उद्योग करें।

आर्य ही भारत के मूल निवासी- अपने इसी स्वार्थ की पूर्ति के लिए वे यह के निवासियों को सदा यही पाठ पढ़ाते रहे कि भारत के आदिम निवासी तो कोल, भील, द्रविड़ जातियों के लोग थे, जो कबीलों में रहते थे और उन्नतिशील आर्यों से उनका कोई सम्बन्ध ही नहीं था। महर्षि स्वामी दयानन्द ने पश्चिमी लोगों द्वारा प्रवर्तित इस मिथक को तोड़ा तथा इस बात को बलपूर्वक प्रतिपादित किया कि आर्य लोग ही आर्यावर्त के आदि निवासी थे। उनके बसने से पहले इस देश में अन्य किसी जाति का निवास नहीं था। उन्होंने आर्यों और द्रविड़ों में धर्मगत भेद को नहीं माना। उन्होंने अंग्रेजों द्वारा लिखे गए इतिहासों से उत्पन्न भ्रान्तियों का प्रबल खंडन किया और भारत के वास्तविक इतिहास के अनेक गौरवपूर्ण प्रसंग उजागर किए।

आसेतु हिमालय एक राष्ट्र- यदि हम आर्यों के विगत इतिहास को देखें, तो स्पष्ट हो जाता है कि इस देश के विदेशी दासता के काल को छोड़कर अत्यन्त प्राचीन काल में देश की एकता को मजबूत करने के प्रयत्न यह, सदा होते रहे हैं। महाभारत काल को ही देखें। उस समय इस देश को विखंडित करने के अनेक कारण उत्पन्न हो गए थे। अन्यायी, अत्याचारी, पराये स्वत्व को छीनने वाले क्षुद्रमनस्क शासकों के पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष के वशीबूत होकर हमारी प्रजा अत्यन्त पीड़ा तथा त्रास का अनुभव कर रही थी। उस समय श्रीकृष्ण जैसे महामनस्वी, नीतिज्ञ प्रज्ञापुरुषों ने आर्य राष्ट्र के संरक्षण तथा नवनिर्माण की कल्पना को साकार किया। उन्होंने ही धर्मराज युधिष्ठिर को आर्यावर्त का एकछत्र सम्राट् घोषित कराने का पुरुषार्थ किया तथा आसेतु हिमालय भारत को एक अखण्ड राष्ट्र बनाया। महर्षि दयानन्द ने उस युगगुरुष को अपने क्षुब्धासुमन अर्पित करते हुए सर्वथा उपयुक्त ही लिखा था-" "देखो, महाभारत में कृष्ण का जीवन अत्युत्तम रीति से वर्णित हुआ है। उन्होंने जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त कोई अधर्म का काम नहीं किया था।"

राष्ट्र पुरुषों का आदर- इसी प्रकार समय-समय पर देश की आजादी तथा अखण्डता को सुरक्षित रखने के लिए महामति चाणक्य तथा समर्थ रामदास जैसे मनस्वी पुरुषों ने सम्राट् चन्द्रगुप्त तथा हिन्दू पद पादशाही के आदर्श को क्रियान्वित करने वाले शिवाजी महाराज को प्रेरित किया। उधर महाराणा प्रताप, वीर दुर्गादास तथा गुरु गोविन्दसिंह ने अत्याचारी केन्द्रीय शासकों से अपने राज्य को स्वाधीन रखने के लिए सर्वोच्च वीरता तथा त्याग के अप्रतिम आदर्श रखे। ऋषि दयानन्द ने इन सभी इतिहास पुरुषों के राष्ट्रीय एकता में योगदान को आदर के साथ स्मरण किया है।

मुस्लिम असहिष्णुता- इस्लामी आक्रमकारियों के समय से ही देश की एकता तथा अखण्डता को क्षति पहुंचने लगी थी। क्योंकि इन विदेशी हमलावरों की असहिष्णु नीति के कारण यहाँ के निवासी हिन्दुओं में असुरक्षा के भाव पैदा हो गए थे। जो हिन्दू अपने मत को त्यागकर इस्लाम स्वीकार कर लेते, उन्हें सुरक्षा की गारंटी दी जाती, जबकि स्वधर्म पर स्थित रहने वालों को द्वितीय श्रेणी का नागरिक बनने के लिए मजबूर किया जाता। उन्हें जजिया नाम का कर देना पड़ता तथा अपनी मर्जी के अनुसार पूजा-उपासना के उनके मौलिक अधिकार भी छीने जाने लगे थे। इन्हीं तथ्यों को दृष्टि में रखकर स्वामी दयानन्द ने मध्यकाल के असहिष्णु इस्लामी शासकों की कठोर साम्प्रदायिक नीतियों का विरोध किया। अपेक्षाकृत उन्होंने अंग्रेजी राज्य की इसलिए सराहना की कि इस राज्य में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुकूल धर्म पालन करने की स्वतन्त्रता थी तथा राजनीतिक पराधीनता होने पर भी देशवासी बहुत कुछ सुरक्षित जीवन बिता रहे थे।

नवजागरण- शताब्दियों के पश्चात् राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता को साकार करने का एक अवसर हमें तब मिला, जब यूरोपीय जातियों के सम्पर्क में आकर भारत में नवजागरण की स्फूर्तिमयी लहर उत्पन्न हुई। राजा राजमोहन राय को नवजागरण का अग्रदूत कहा गया है। उन्होंने धर्म के क्षेत्र में वैदिक ऐकेश्वरवाद की पुनः स्थापना की। उन्होंने मध्यकालीन पौराणिक विश्वासों से उत्पन्न बहुदेववाद का प्रबल खण्डन किया तथा वेदों में निहित एकेश्वर सिद्धान्त को ही आर्यों का मूलभूत सिद्धान्त ठहराया। आलोचकों का तो कहना है कि राममोहन राय द्वारा एकेश्वरवाद का प्रतिपादन एक मजबूरी थी, क्योंकि उन्हें ईसाइयत तथा इस्लाम में स्वीकृत एकेश्वरवाद की प्रतिद्वन्दिता में हिन्दू एकेश्वरवाद को सिद्ध करना था। किन्तु यह आक्षेप सर्वथा मिथ्या तथा अन्यायपूर्ण है। ईसाइयत में तो पिता, पुत्र तथा परमात्मा का त्रैत स्वीकार किया गया है, जबकि इस्लाम में अल्लाह की एकता पर जोर देने के साथ साथ मोहम्मद के पैगम्बर होने की स्वीकृति आवश्यक समझी गई है। यथार्थतः राममोहन राय ने जिस एकेश्वरवाद का प्रतिपादन किया था, वह वैदिक, औपनिषदिक तथा वेदान्त दर्शन पर आधारित एक सर्वोच्च सच्चिदानन्द सत्ता को स्वीकार करना ही था, किन्तु वह शंकर के सर्वेश्वरवाद तथा मायाश्रित अद्वैतवाद से सर्वथा भिन्न था। ऋषि दयानन्द ने भी उपर्युक्त प्रकार के एकेश्वरवाद को आर्य दर्शन के सर्वथा अनुकूल ठहराया तथा इसे देश की एकता के लिए अनिवार्य बताया।

राष्ट्रीय एकता के सूत्र- राममोहन राय के प्रारम्भिक प्रयत्नों के पश्चात् महर्षि दयानन्द ने ही देश की स्वतन्त्रता, एकता तथा अखण्डता के स्वर्णिम सूत्रों को प्रस्तुत किया। उन्होंने स्वधर्म, स्वदेशी, स्वसंस्कृति तथा स्वभाषा की एकता को राष्ट्रीय एकता के चार मजबूत स्तम्भ माना। उदयपुर प्रवास के समय पं. मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या द्वरा पूछने पर उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया था कि जब तक इस देश के निवासियों में भाषागत, उपासनागत तथा विचारगत एकता नहीं होगी, तब तक समग्र राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता स्वप्नवत् अयथार्थ ही रहेगी। महर्षि स्वामी दयानन्द के इस मन्तव्य का चिन्तन तथा तदनुकूल आचरण आज की प्रबल आवश्यकता है।

●●●

वेदोज्ज्वला

- आचार्य राहुलदेवः

(हनुमान जयन्ती पर विशेष)

विषय - मेरा परिचय ऋषिः - प्रजापतिर्ऋषिः
देवता - राजा देवता छन्दः - निचृद गायत्री
स्वरः - षड्जः

बाहू में बलमिन्द्रियः हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम।।
- यजुर्वेद २०।७

पदपाठः - बाहूऽइति बाहू। मे। बलम्। इन्द्रियम्। हस्तौ। मे। कर्म। वीर्यम्। आत्मा। क्षत्रम्। उरः। मम।।

पदार्थः - मे - मेरी बाहू - दोनों भुजाओं में
बलम् - बल इन्द्रियम् - धन है, मे - मेरे
हस्तौ - दोनों हाथों में कर्म - कर्म करने की शक्ति वीर्यम् - पराक्रम है
मम - मेरा आत्मा - अपना स्वरूप और उरः - हृदय
क्षत्रम् - क्षतों से त्राण करनेवाला, दुःखों से रक्षा करनेवाला है।

भावार्थः - मनुष्य की दोनों भुजाओं में बल और धन है। उसके दोनों हाथो में शक्ति और पराक्रम है। वह अपने इस स्वरुप को पहचाने जिससे वह दुःखो से स्वयं और अन्यों की रक्षा कर सके।

मन्त्र की मुख्य बातें -

१) मेरा परिचय कुछ इस प्रकार है
२) मेरी दोनों भुजाओं में बल और धन है
३) मेरे दोनों हाथों में शक्ति और पराक्रम है
४) मेरा हृदय दूसरे के दुःख से द्रवित होता है
५) मेरी आत्मा को जो पसन्द नहीं वह कार्य मैं दूसरों के साथ नहीं करता।

व्याख्या - मन्त्र में यह बात कही है कि आप मेरा परिचय पूछते हैं, तो सुनिए मैं कौन हूँ-

इस मन्त्र के माध्यम से मेरा पहला परिचय यह है कि "मे बाहू बलमिन्द्रियम्" - मेरी भुजाओं में बल और धन है। मैं प्रतिदिन प्रातकाल और सायंकाल सन्ध्या और यज्ञ करते समय अपनी यह दोनों प्रार्थना नहीं भूलता "ओम् बाहुभ्यां यशोबलम्" तथा "ओम् बाह्वोर्मे बलमस्तु।" अपने इस बल से मैं प्रतिदिन दो बार परिचित होता हूँ। इससे मुझे कार्य करने में उत्साह मिलता है। मैं हतोत्साहित और निराश नहीं होता। जिसे मुझे अपनी कार्य क्षमता पर विश्वास बढता है।

मन्त्र में मेरा दूसरा परिचय यह है कि "मे हस्तौ कर्म वीर्यम्" - मेरे हाथों में कर्म करने की शक्ति और पराक्रम है। मेरे हाथों में मेरा भाग्य है। मैं अपने इन हाथों से अपना भाग्य लिखता हूँ। क्योंकि मैं पुरुषार्थ पर विश्वास करता हूँ किसी ने क्या खूब कहा है-

यूं ही नहीं होती हाथों की लकीरों के आगे उंगलियाँ।
रब ने भी किस्मत से पहले मेहनत लिखी है।

वेद (अथर्व० ४।१३।६) ने भी मेरे दोनों हाथों के बारे में कितनी सुन्दर बातें कही है देखिए -

अयं मे हस्तो भगवानयं मे भगवत्तरः।
अयं मे विश्वभेषजोऽयं शिवाभिमर्शणः।।

अर्थात् - मेरा दाहिना हाथ ऐश्वर्यशाली है और बायाँ हाथ तो उससे भी अधिक ऐश्वर्यशाली है। मेरे दाहिने हाथ में सारी ओषधियाँ रक्खी हैं और बाएँ हाथ का तो स्पर्श भी कल्याणकारी है।

मन्त्र में मेरा तीसरा और चौथा परिचय यह है कि "मम आत्मा उरः क्षत्रम्" - मेरी आत्मा और मेरा हृदाय दूसरों को कवच की तरह है जो दूसरों को दुखों से बचाते हैं। मेरी आत्मा तो विश्वमानव की तरह है। उसकी महानता तो यह है कि "आत्मनः प्रतिकुलानि परेषां न समाचरेत्" जो व्यवहार मेरे आत्मा के प्रतिकूल है वह-वह व्यवहार मैं अन्य प्राणियों के साथ नहीं करता जैसे मुझे मारने वा काटने से दर्द होता है। वैसे ही दूसरे प्राणियों को भी होता है। "आत्मवत् सर्व भूतेषु" की भावना से मैं प्रेरित हूं। चौथा मेरा हृदय बहुत उदार और विशाल है। मैं संकीर्ण भावना नहीं रखता। "ओ३म् महः पुनातु हृदये।" मेरा हृदय तो ईश्वर के महानता से प्रेरित है क्योंकि स्वयं ईश्वर मेरे हृदय में मुझ आत्मा के साथ विराजते हैं। जहाँ आत्मा और परमात्मा दोनों का निवास स्थान हो वह हृदय तो लोगों के दुखो को देखकर द्रवित तो होगा ही साथ में सुख दुख में उनका सहायक भी होगा। मैं ऐसे अद्भुत परिचय का धनी हूँ। सब मनुष्यों को इस प्रकार से अपना परिचय जानना चाहिए।

हनुमानजी भी अपना परिचय ऐसे ही रखते थे। तभी तो आज लाखों वर्षो बाद भी हम हनुमान के परिचय से परिचित हैं। हनुमान ने भी अपना परिचय इस वेद मन्त्र के समान ही रखा था। वास्तव में उनकी दोनों भुजायें बल और ओज की उपासक थी। उन्होंने अपने महान ब्रह्मचर्य के प्रताप से विलक्षण कार्य किये थे। समुद्र को लांघना और सीता माता की खोज। दो दुरुह कार्यो के साथ राक्षस प्रवृत्ति का समूल नाश और चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने में भगवान राम की जो सेवा भगवान हनुमान ने बिना किसी लोभ लालच धन और राज्य के किसी टुकड़े के स्वार्थ से रहित होकर की थी। क्या कोई बता सकता है राम की व्यक्ति गत सहायता और सामाजिक सहायता में हनुमान जी का क्या स्वार्थ था? आपको ऐसा निष्काम सेवाभावी पात्र संसार में कोई दूसरा नहीं मिलेगा। भगवान राम के समकालीन होकर भी राम के तेज से हनुमान की कीर्ति कभी ओझल नहीं हुई। उनकी प्रभुताई को आज भी संसार नमन करता है।

क्रमशः पृ. ८.....

सायणाचार्य का वेदार्थ

-पण्डित ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु

सायणाचार्य से पूर्व उपलब्ध होनेवाले स्कन्द, दुर्ग आदि के वेदभाष्यों तथा सायणाचार्य के भाष्य में बहुत अधिक भेद नहीं, किन्तु सायण से पूर्ववर्ती भाष्यकारों तक वेदार्थ की विविध (आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधियज्ञ) प्रक्रिया पर्याप्त मात्रा में रही। याज्ञिक प्रक्रिया का शुद्ध स्वरूप बना रहता, तब तो कुछ भी हानि नहीं थी, त्रिविध प्रक्रिया में याज्ञिक प्रक्रिया भी एक है ही, तदनुसार भी मन्त्र का अर्थ होना ही चाहिए। पर सायणाचार्य ने तो अपने पूर्ववर्ती आचार्यों की प्रक्रिया को न जाने कैसे छोड़कर केवल याज्ञिक प्रक्रियापरक ही वेदमन्त्रों का अर्थ किया और वह भी अधूरा। अधूरा इसलिए कि सायण का वेदभाष्य केवल श्रौतयज्ञों की प्रक्रिया को लक्ष्य में रखकर ही किया हुआ है। गृह्य सूत्रों में विनियुक्त मन्त्रों के विषय में सायण का भाष्य कुछ एक स्थलों को छोड़कर प्रायः कुछ भी नहीं कहता। गृह्य अर्थात् स्मार्त्त प्रक्रिया में भी तो वेदमन्त्रों का अर्थ होना ही चाहिये। इस प्रक्रिया के लिए हमें गृह्य सूत्रों के भाष्यकारों के किये वेदार्थ से वेदमन्त्रों के अर्थ देखने होंगे। ऐसी दशा में सायण भाष्य को याज्ञिक प्रक्रिया में अधूरा ही कहेंगे। इतना ही नहीं, श्रौतप्रक्रिया के विषय में भी सायण कहां तक प्रामाणिक है, यह अभी साध्यकोटि में ही है। श्रोत विषय में भी सायण की अनेक भूलें हैं, जो कालान्तर में दिखाई जा सकती हैं।

इसमें तो कुछ भी सन्देह नहीं कि सायणाचार्य ने अपने समय में वैदिक साहित्य में महान् प्रयास किया। वेदों के भाष्य तथा ब्राह्मणग्रन्थों और आरण्यकों के भाष्य बनाए। अन्य अनेक विषयों में भी बहत से प्रौढता पूर्ण ग्रन्थ लिखे, चाहे वे सब उनकी अपनी कृति न हों, उनके संरक्षण में बने हों, पर उनका उत्तरदायित्व तो उन पर ही है। सायणाचार्य के इस प्रयास के लिए प्रत्येक वेद प्रेमी को उनका अनुगृहीत होना चाहिए। उनके वेदभाष्य में व्याकरण और निरुक्तादि का प्रयोग भी हमें पर्याप्त मात्रा में मिलता है। परन्तु मूलभूत धारणा के अनिश्चित वा भ्रान्त होने के कारण उनका मूल्य कुछ भी नहीं है और कई स्थानों में विरुद्ध भी है।

जब सायणाचार्य के मन में यह मिथ्या धारणा निश्चित हो चुकी थी कि वेदमन्त्र यज्ञप्रक्रिया का ही, प्रतिपादन करते हैं, ऐसी अवस्था में यह स्वाभाविक ही था कि वह अपना समस्त यत्न वा प्रमाणादि सामग्री यज्ञप्रक्रिया के लिए ही समर्पित करते। जब ऐनक ही हरी पहन ली तो सब पदार्थ हरे दिखाई देने में आश्चर्य ही क्या हो सकता है ? उपयुक्त धारणा के कारण उसका वेदार्थ में अनेक अनावश्यक और आधाररहित सिद्धान्तों तथा परिणामों पर पहुंचना अनिवार्य था। उदाहरणार्थ पाठक देखें –

सायण के वेदभाष्य में प्रायः सर्वत्र जहां-जहां मूलमन्त्र में जन, मनुष्य, जन्तु, नर, विट्, मर्त आदि सामान्य मनुष्यवाचक शब्द आये हैं, वहां सर्वत्र निर्वचन के आधार को छोड़कर, वाच्यवाचक सम्बन्ध के सामान्य नियम की अवहेलना करके सामान्य 'मनुष्य' अर्थ न करके 'यजमानादि' ही किया है। जैसा कि ऋग्वेद १।६०।४ में 'मानुषेषु यजमानेषु'। ऋ० १।६८।४ में 'मनोरपत्ये यजमानरूपायां प्रजायाम्। ऋ० १।१२८।१ में 'मनुषः मनुष्यस्याध्वर्योः'। ऋ० १।१४०।१२ में 'जनान् यजमानान्' आदि। भला बताइये इन मनुष्य, जन्तु, जन आदि शब्दों के अर्थ 'यजमान' ही हों, इसमें क्या नियामक है ? कारण क्या ? कारण यही कि यज्ञप्रक्रिया की ऐनक चढ़ी है। प्रत्येक मनुष्य यजमान या ऋत्विक ही दिखाई दे रहा है। भला नेता या मननशील जो कोई भी हो, यह अर्थ क्यों नहीं लेते? सायण होते तो उनसे पूछा जाता।

सब मन्त्रों का तीन प्रकार का अर्थ होता है। इतने से ही सायण का सारा वेदार्थ तीसरा भाग रह जाता है। शेष दो भाग (आध्यात्मिक तथा आधिदैविक) में उसकी अनभिज्ञता वा अपूर्णता स्पष्ट सिद्ध है।

विविध प्रक्रिया की अवहेलना ही वेदार्थ में एक ऐसी हिमालय जैसी भूल है, जो कदापि क्षन्तव्य नहीं हो सकती। सायण की भूल की समाप्ति यहीं पर ही नहीं हो गई। उनकी अन्य मौलिक भूलों का भी निर्देश करना हम आवश्यक समझते हैं।

(१) यज्ञ में अध्वर्यु आदि के कर्मों को बताने के लिए ही वेदभाष्य करता हूं, ऐसा सायण ने कहा है। (देखो सायण के ऋग्वेदभाष्य के उपोद्घात के प्रारम्भ में)।

(२) सायण सामवेद-भाष्य-भूमिका के प्रारम्भ में –

यज्ञो ब्रह्म च वेदेषु द्वावर्थौ काण्डयोर्द्वयोः।
अध्वयु मुख्यैर्ऋत्विग्भिश्चतुर्भिर्यज्ञसम्पदः।।६।।

इसमें वेद के मन्त्रों का अर्थ यज्ञपरक तथा ब्रह्मपरक माना। हमें तो सायण के इस लेख से प्रति प्रसन्नता हई कि चलो ब्रह्मपरक अर्थ नहीं किया तो न सही, ब्रह्मपरक अर्थ का निर्देश तो कर ही दिया है। पर हमारी यह प्रसन्नता अधिक देर न रह सकी, जब हमने काण्व-संहिता-भाष्य की भूमिका में सायण का यह लेख देखा–

'तस्मिश्च वेदे द्वौ काण्डो कर्मकाण्डो ब्रह्मकाण्डश्च। बृहदारण्यकाख्यो ग्रन्थो ब्रह्मकाण्डस्तव्यतिरिक्तं शतपथब्राह्मणं संहिता चेत्यनयोर्ग्रन्थयोः कर्मकाण्डत्वम्, तत्रोभयत्राधानाग्निहोत्रदर्शपूर्णमासादिकर्मण एवं प्रतिपाद्य स्वात्।

यहां पर सायण शतपथब्राह्मण ही नहीं अपितु 'संहिता' में भी 'दर्शपूर्णमासादिकर्मण एवं प्रतिपाद्यत्वात्' इस वचन से केवल दर्शपूर्ण मासादि यज्ञकर्मों का ही प्रतिपादनमात्र मानता है। पाठक विचार करें कि स्कन्द स्वामी की विविध प्रक्रिया, जिसे वह यास्काभिमत मानता है, उपस्थित होने पर भी, सायण 'न हि स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति' वा 'पश्यन्नपि न पश्यति' देखता हया भी नहीं देखता, यही तो कहना पड़ेगा। क्या सायण ने स्कन्द स्वामी का भाष्य देखा ही नहीं होगा, यह कभी हो सकता है ? जब कि इस समय भी सैकड़ों वर्ष पीछे सायण की जन्मभूमि दक्षिण प्रान्त में ही स्कन्द की निरुक्तटीका मिली है।

कुछ भी सही, सायण वेदार्थ की दीवार बन गया। इतनी ऊंची और इतनी दृढ़ कि किसी को लांघने का साहस नहीं होता था। पर प्रभू की असीम कृपा से आचार्य दयानन्द उस दीवार को लांघ गए और उनकी कृपा से आज हम शास्त्र के आधार पर लांघ रहे हैं।

(३) सायण ने ऋग्भूमिका में मीमांसा के सिद्धान्तानुसार वेद में अनित्य इतिहास का-व्यक्तिविशेषों के इतिहास का निषेध मान कर वा निषेध करके भी अपने वेदभाष्य में यत्र तत्र सर्वत्र अनित्य व्यक्तियों का इतिहास स्पष्ट दर्शाया है।

देखिए सायण ऋग्भूमिका में –

(क) 'शतं हिमा इत्येतद् व्याख्येयमन्त्रस्य प्रतीकम्, अविशिष्ट तु तस्य तात्पर्यव्याख्यानम्।'

(ख) 'शतपथब्राह्मणस्य मन्त्रव्याख्यानरूपत्वाद् व्याख्येयमन्त्रप्रतिपादकः संहिताग्रन्थः पूर्वभावित्वात प्रथमो भवति।। (सायणकाण्व भूमिका)

इन दोनों स्थलों में शतपथ को मन्त्र का व्याख्यान मान कर भी 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' (ऋगादिभाष्यभूमिका) की ही रट लगाई है।

इतिहास तथा वेदलक्षण विषय के परस्पर विरोध को देखकर भला कौन थोड़ा-सा ज्ञान रखनेवाला भी सायण की विद्वत्ता का प्रशंसक हो सकता है ? इन विषयों में वास्तव में सायण के मन में सन्देह ही बना रहा, आध्यात्मिक भावना भी नहीं, नहीं तो आचार्य दयानन्द की भांति १८-१८ घण्टे समाधि द्वारा वेदार्थ के इन परमावश्यक मौलिक सिद्धान्तों का निर्णय आत्मा में करता तब लिखता तो ठीक था।

यदि अनिश्चयात्मकता सायण के हृदय में न होती, यथावत् व्यवसायात्मक बुद्धि से वेदभाष्य करता तो संसार का महान् उपकार होता। इस अनिश्चयात्मकता के कारण ही उसके 'तस्मात् सर्वैरपि परमेश्वर एव हूयते। यद्यपि इन्द्रादयस्तत्र तत्र हूयन्ते तथापि परमेश्वर स्यैवेन्द्रादिरूपेणावस्थानाद' सायण ऋग्भाष्यभूमिका। अर्थात् परमेश्वर के ही इन्द्रादि रूप में होने से यह सब ईश्वर की ही स्तुति है। सायणाचार्य अपनी इस बात पर भी दृढ़ न रह सका। यह बात हम आचार्य दयानन्द में ही पाते हैं। जो बात लिखी निश्चयात्मकता से लिखी। संसार को सन्देह में नहीं डाल गए। किसी विषय पर न लिखा हो यह दूसरी बात है।

इस प्रकार की अन्य भी अनेक बातें दर्शाई जा सकती हैं, जिनसे प्रत्येक निष्पक्ष विद्वान् को इसी परिणाम पर पहुंचना होगा और हम इस विवेचना से इसी परिणाम पर पहुंचे हैं कि सायण वेद के मौलिक अर्थों तक नहीं पहुंच सका। सायण की हिमालय जैसी ये मौलिक भूलें कदापि क्षन्तव्य नहीं हो सकतीं।

सायण की भूल के दुष्परिणाम –

यह भूल सायण तक ही रह जाती या शताब्दियों तक भारत तक ही यह भूल रह गई होती तब भी कोई बात नहीं थी। इसके परिणाम बड़े भंयकर हुए । यह ठीक है कि महात्मा बुद्ध के काल में भी यज्ञयागादि की इस प्रधानता ने ही बुद्ध जैसे महापुरुष तथा उनके अनुयायियों को यह कहने पर बाधित कर दिया था कि हम ऐसे वेदों को मानने को तत्पर नहीं, जिनमें पशु-हिंसा का विधान हो।

विदेशीय राज्य की रक्षा को लक्ष्य में रखकर या पीछे से भाषाविज्ञान में विशेष जानकारी प्राप्त करने के विचार से संस्कृत भाषा में सामान्यतया और वेद-विषय में विशेषतया लगनेवाले योरूप, अमेरिकादि देशों के अनेक विद्वानों को भी (अन्य कोई वेदार्थ उपलब्ध न होने से) सायण का ही अनुगामी बनना पड़ा और जो-जो सायण के भाष्य में पुरानी मिथ्या बातों वा मिथ्या धारणाओं पर प्रामाणिकता की मोहर लग चुकी थी, उसी के पीछे विदेशी विद्वानों का समूह चला। – ऐतिहासिक वाद के विषय में सायण से पूर्व आचार्य स्कन्दस्वामी का 'एवमाख्यानस्वरूपाणां मन्त्राणां यजमाने नित्येषु च पदार्थेषु योजना कर्तृतव्या। औपचारिकोऽयं मन्त्रेष्वाख्यानसमयः' यह सिदान्त चला आता था। प्रत्येक मन्त्र का तीन प्रकार का अर्थ होता है, यह धारणा परम्परा से स्कन्द के काल तक चली आई थी। सायण ने उनका उल्लेख भी अपने भाष्य में किया होता, तब भी वेदार्थ की मौलिक धारणायें किसी प्रकार जीवित रह जातीं। तब इन विदेशीय स्कालरों को भी वेदार्थ के विषय में सोचने का अवसर होता कि 'आध्यात्मिक और आधिदैविक अर्थ तो अभी शेष हैय सायण के भाष्य में ही वेदार्थ की परिसमाप्ति नहीं हो जाती और इतिहास का सारा वर्णन औपचारिक के रूप में है, न कि वास्तविक घटना' तब महान् उपकार होता। विदेशीय विद्वान् हमारी सारी संस्कृति, सभ्यता और साहित्य को उलटे रूप में सबके सामने न रख सकते।

मैं तो कहता हूं कि यदि सायणभाष्य का ही हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू वा अन्य जिस किसी भाषा में अनुवाद करके किन्हीं शिक्षणालयों में रख दिया जावे तो निश्चय ही समझना चाहिये कि कुछ श्रद्धालुओं को छोड़ कर सबकी एक ध्वनि उठेगी कि ये वेद जंगलियों की यों ही बड़बड़ाहट या अण्ट-सण्ट कृत्तियां हैं, जिनसे मानव-समाज को कुछ भी लाभ नहीं हो सकता। पंजाब यूनिवर्सिटी की शास्त्री परीक्षा में जितना अंश सायण भाष्य का है उससे, सायण की छाप के कारण, शास्त्री प्रायः वेद विमुख ही हो जाते हैं। क्योंकि उन्हें वेद के वास्तविक स्वरूप का तो दर्शन भी नहीं हो पाता। इस सारे अनर्थ का मूल सायणाचार्य वेदार्थ ही है। यहां हम यह भी कह देना चाहते हैं कि 'मुख्येन व्यपदेश' नियमानुसार यदि सेना जा रही हो तो भी मुख्यता से यही कहा जाता है कि 'राजा जा रहा है।' इसी प्रकार याज्ञिक प्रक्रिया के अनुसार भाष्य करनेवाले अन्य सभी भाष्यकार इसी कोटि में आ जाते हैं। उनके प्रथम निर्देश की यहाँ आवश्यकता नहीं। सब 'यथा हरिस्तथा हरः' के अनुसार ही समझने चाहिये। सायण का नाम इसलिए भी बार-बार आता है कि वेदों तथा ब्राह्मण ग्रन्थों पर सबसे अधिक भाष्य सायणाचार्य के ही हैं जिनको लेकर आगे लोगों ने अनुवाद किये। सायण के भाष्य को पढकर कोई भी समझदार वेद के उस स्वरूप तक नहीं पहुंच सकता, जो ऋषि मुनि मानते हैं–

'स सर्वोऽभिहितो वेदे, सर्वज्ञानमयो हि सः'
(मनु० २।७४)

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः ।।
महाभारत शान्तिपर्व अ० २४।२३२

वेद समस्त विद्याओं का स्रोत है, सम्पूर्ण ज्ञान वेद से ही मानवसमाज को प्राप्त हुआ। सार्वभौमिक नियमों का प्रतिपादन वेद में है, इत्यादि सब बातें सायणभाष्य को पढ़कर कभी मन में नहीं बैठ सकतीं।

सायण और विदेशीय विद्वान् –

विदेशीय विद्वानों को वेदविषय में सायणभाष्य ही एकमात्र आश्रय मिला। वह उनके अनुकूल निकला, क्योंकि वे तो चाहते ही थे कि भारतीयों को अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता और साहित्य के प्रति जितनी अश्रद्धा पैदा करने में हम सफल हो जायेंगे, उतना ही हमारा राज्य भारत में स्थायी दृढ़ होता जायगा। उन्होंने वेद के जो अनुवाद अंग्रेजी में किये, वे सब के सब सायण की छाया से ही किये। यह ठीक है कि इन विदेशीय विद्वानों ने भारतीय न होते हुए भी हमारे संस्कृत साहित्य में, विशेषकर वैदिक साहित्य में, अनुपम प्रशंसनीय तथा अनुकरणीय उद्योग किया। इसके लिये हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। निस्सन्देह उन्होंने वैदिक साहित्य में खोज का उपक्रप करके हम भारतीयों के अपने साहित्य की रक्षा का उत्तम मार्ग दर्शा दिया। जिस-जिस का भी किसी विदेशी ने सम्पादन किया है, सर्वसाधारण की दृष्टि निस्सन्देह वह उनके अत्यन्त परिश्रम और निरन्तर धैर्य तथा गम्भीर विवेचना का परिचय देता है। यह दूसरी बात है कि उनका ज्ञान शास्त्र विषय में गहरा नहीं, अपितु बहुत थोड़ा है। अतः जिस विषय में उनका ज्ञान नहीं, उसमें उनसे भूलें रह जाना स्वाभाविक ही है। पर उन जैसा परिश्रम इस पराधीन देश के विद्वानों ने प्रायः नहीं किया वा उनके गुण की ओर ध्यान नहीं दिया, यही कहना पड़ता है। देश की पराधीनता के बन्धन ढीले होने पर आर्यों (हिन्दुओं) को वा कांग्रेस को समझ आ गई तो सम्भव है हमारी वैदिक साहित्य की यह अमूल्य सम्पत्ति फिर से पहले उच्च शिखर पर पहुंच जावे। (पर यह बात अभी कुछ कठिन प्रतीत होती है। प्रायः सब लोग विदेशी संस्कृति, सभ्यता और साहित्य के उपासक हो रहे हैं। यह विष भारत से न जाने कितने लम्बे काल के पश्चात् निकल सकेगा।)

यह सब होते हुए भी हम यह कहे विना नहीं रह सकते कि उनकी भावना अच्छी नहीं थी, जिससे प्रेरित होकर वे हमारे साहित्य की खोज में लगे। अपने इस विचार की पुष्टि में विचारशील महानुभावों के सामने एक ही उदाहरण उपस्थित करना पर्याप्त होगा। मोनियर विलियम्स अपने कोश की भूमिका में लिखता है कि यह संस्कृत-अंग्रेजी डिक्शनरी या संस्कृत-ग्रन्थों के अनुवाद का कार्य, जो मि. बौडन के ट्रस्ट द्वारा हो रहा है, वह सब भारतीयों को ईसाई बनाने में अपने देश (इङ्गलैण्ड) वासियों को सहायता पहुंचाने के लिये है !!! इतने से ही विचारशील महानुभाव समझ सकते हैं कि विदेशियों ने किस ध्येय को लक्ष्य में रखकर हमारे वैदिक साहित्य तथा अन्य संस्कृत साहित्य में इतना घोर परिश्रम किया। सब योरूपीय तथा अन्य देशीय विद्वान् प्रायः इसी धारणा और भावना को लेकर हमारे सारे साहित्य की खोज में लगे, हमारे कल्याण के लिये नहीं, यह दुःख से कहना पड़ता है।

हमें तो यहां यह बतलाना है कि सायण की वेदार्थ विषय की मिथ्या धारणा का कितना दुष्परिणाम हुआ। सोचने की बात है कि इन विदेशी विद्वानों को यदि सायण की अपेक्षा वेद का उत्तम भाष्य मिला होता, तो निश्चय ही इनके अंग्रेजी वा अन्य योरोपियन भाषाओं में किये अनुवाद अवश्य ही भिन्न होते। अब तो वे सब के सब सायण से आगे नहीं जा सके। एक आध ने थोड़ा बहुत यत्न किया, पर धारणा सुदृढ़ न होने तथा प्रमाण न मिलने से रह गये। कर ही क्या सकते थे ? यदि सायण की मिथ्या धारणा और उसके आधार पर किया वेदार्थ अर्थात् वेदभाष्य न होता तो मैक्समूलर का ऋग्वेदभाष्य पर का लेख तथा ग्रिफिथ के ऋग्, यजुः, साम और अथर्व के अनुवाद, विलसन का ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद, लुड्विंग का ऋग्वेद का जर्मनानुवाद तथा ह्विटनो का अथर्ववेद का अंग्रेजी अनुवाद, वैनफी का सामवेद का जर्मनानुवाद, कीथ का तैद्र संहिता, ऐतरेय और कौषीतकी ब्राह्मण का अनुवाद, हाग का ऐतरेय ब्राह्मण का अनुवाद, ऐगलिङ्ग का शतपथब्राह्मण का अनुवाद – इन सब का स्वरूप अवश्य ही वह न होता, जो अब है। सायण के वेदार्थ ने इन की आंखों पर भी पट्टी बांध दी।

इनसे अतिरिक्त ओल्डनबर्ग ब्लूमफील्ड, आफ्रैख्ट मैकडानल, बोटलिङ्ग आदि ने जो वैदिक साहित्य के भिन्न-भिन्न विषयों पर घोर परिश्रम किया, इसका स्वरूप भी अवश्य ही भिन्न होता। इसी प्रकार काए जी, क्रिस्ते, रियूटर, सोलोमन्स, बर्नेल, नेगलीन आदि श्रौत और गृह्यसूत्र आदि पर परिश्रम करनेवाले विद्वानों का दृष्टिकोण भी अवश्य ही भिन्न होता। इनमें जिनका स्वार्थ इसी बात में था कि भारत की संस्कृति, सभ्यता का निम्नतम स्वरूप ही संसार के सामने आवे और जिन्हें भारतवासियों को भी उनके वास्तविक स्वरूप से अपरिचित रखना ही अभिप्रेत था, उनको छोड़कर बहुत से विद्वान् वेदार्थ के शुद्ध स्वरूप को जान कर अवश्य प्रसन्न होते और भारत के सदा ऋणी रहते !!!

वेदार्थ का सच्चा स्वरूप कभी भी सामने नहीं आ सकता, जब तक सायण के वेदार्थ की भित्ति (दीवार) बीच में खड़ी रहेगी। जो व्यक्ति उस दीवार को लांघ जाएगा, वही सच्चे वेदार्थ का दर्शन कर सकता है, दूसरा नहीं। यहां इस विषय के हमारे सारे कथन का सार यही है कि अन्य सामग्री के अभाव में सायण के कन्धे पर चढ़कर पूर्वोक्त धारणाओं के आश्रय से (उसकी मिथ्या धारणाओं को छोड़कर) हमें दूर की वस्तु देखने में कुछ सहायता भले ही मिले, परन्तु हमें वेदार्थ के लिये सायण से आगे चलना होगा।

(वेदवाणी, वर्ष १, अंक १)

(जन्म- १४ अक्तूबर १८९२, मृत्यु- २२ दिसम्बर १९६४)

पंजी०सं० आर.एन.आई.-२२४१/५७ -आर्यमित्र ०६ एवं १३ अप्रेल, २०२३ पोस्टल रजि.जी.पी.ओ. लखनऊ/एन.पी.-१४/२०१६-२१ एक प्रति ₹ ५.००

आर्य मित्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६४१५३६५५७६, सम्पादक-६४५१८८१६७७
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,

.....

.....

.....

अपराध निरोधक समिति उ.प्र. का 25वां वार्षिक अधिवेशन

अपराध निरोधक समिति उत्तर प्रदेश का २५ वां वार्षिक अधिवेशन दिनांक ५ अप्रैल २०२३ स्थान विश्वेश्वरैया भवन राजभवन लखनऊ में मुख्य अतिथि माननीय असीम अरुण जी मंत्री समाज कल्याण विभाग उत्तर प्रदेश विशिष्ट अतिथि श्री देवेंद्रपाल वर्मा जी प्रधान श्री पंकज जायसवाल जी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश श्री आर.एस. वर्मा जी वरिष्ठ आईएएस न्यायमूर्ति राजीव लोचन जी अध्यक्षता श्री कमलेश श्रीवास्तव जी संचालन श्री संतोष श्रीवास्तव जी सचिव अपराध निरोधक समिति संयोजक श्री लक्ष्मी कांत मिश्रा वरिष्ठ अधिवक्ता थे। अधिवेशन में सैकड़ों जागरूक नागरिक उपस्थित थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान–श्री देवेंद्रपाल वर्मा व मंत्री–श्री पंकज जायसवाल द्वारा श्री एस.सी. यादव (आई.एफ.एस.) एवं डॉ. मान सिंह यादव विधायक उत्तर प्रदेश को सभा भवन में दिनांक 8 अप्रैल 2023 को एक शिष्टाचार भेंट में कालजई ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित किया गया।

पृष्ठ ६ का शेष.....

आज यदि देखा जाये तो भारत में राम से भी अधिक हनुमान के मन्दिर दिखाई देते हैं। मैं कोई तुलना नही कर रहा। किन्तु इस देश में हनुमानजी की भक्ति अनुपम है। आज हनुमान के महान व्यक्तित्व का उपासक हमारा भारतदेश उनको बन्दर जैसे तुच्छ प्राणि से जोड़ कर देखता है। बन्दरों को देखकर उन्हें हाथ जोड़ना और हनुमानजी का नाम स्मरण करना कितनी तुच्छ बात है। क्या बन्दर योनि से मनुष्य योनि से श्रेष्ठ है? कैसे एक महान दिव्य पुरुष और ब्रह्मचर्य के सबसे बडे उदाहरण को आप बन्दरों से जोड़ सकते हैं। क्या कभी कोई बन्दर ब्रह्मचर्य का महान अनुष्ठान कर, परिष्कृत व्याकरण को पढ, चारों वेदों का ज्ञाता और संस्कृत का प्रकाण्ड पण्डित हो सकता है? यदि सुग्रीव आदि बन्दर थे तो उनकी स्त्रियाँ मानव कैसे हो सकती थी। आज हनुमानजी के विशुद्ध जीवन और उनके महान पराक्रम बल वीर्य ओज ब्रह्मचर्य पालन आदि गुणों को जानने और सीखने की आवश्यकता है। रामायण में जब राम और लक्ष्मण सीता माता की खोज करते हुये ऋष्य मुक पर्वत के पास पहुंचे। तो सुग्रीव को लगा सम्भवतः बाली ने इन्हें मुझे मारने के लिये भेजा हो। तब सुग्रीव हनुमान को राम लक्ष्मण का भेद लाने के लिये भेजते हैं। हनुमान जब राम लक्ष्मण से वार्तालाप करते हैं उसी प्रसंग में हनुमान के वास्तविक रुप को न जानते हुये भी उनकी बोलचाल उनका उच्चारण और भाषा से राम को पता लग जाता है। फिर वे लक्ष्मण से जो कहते हैं वह ध्यान देने योग्य है -

नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेद्धारिणः ।
नासामवेदविदुषश्शक्यमेवं विभाषितुम् ।।
नूनं व्याकरणं कृत्सनमनेन बहुधाश्रुतम् ।
बहु व्याहृतेन न किंचिदपशब्दितम् ।।

अर्थ - जिसने ऋग्वेद न पढा हो, यजुर्वेद का अभ्यास न किया हो, सामवेद में जिसका वैदुष्य न हो वह इस प्रकार परिष्कृत भाषा नहीं बोल सकता। निश्चय ही इन्होंने व्याकरण को बडी सूक्ष्मता से पढा है। क्योंकि इतने समय के वार्तालाप में इन्होंने उच्चारण और बोलने में कोई गलती नहीं की।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि हनुमान वीर, पराक्रमी, ब्रह्मचारी, हृष्ट पुष्ट, बडी भुजाओं वाले होने के साथ-साथ बहुत बडे विद्वान और वेदों के ज्ञाता थे।

सब प्रभु की माया है।

-आशुतोष मोदनवाल

कभी कभी भटक जाता हूं
कुछ गलत कह और कर जाता हूं
फिर अंदर मन अशांत हो जाता हैं
ये मैंने क्या कह और कर दिया
इस बात पर पछताता हूं
फिर स्वयं को वापस जगाता हूं
फिर पुरानी स्थिति में आकर शांत हो जाता हूं।

जैसे आंधी आती है धूल उड़ाती है
आंधी जाती है शांती छाती है
इसी क्रम में स्वयं को बार बार
घिरता पाता हूं ।
पर इस संघर्ष से हर बार मैं
थोड़ा ऊंचा उठ जाता हूं।

सब प्रभु की माया है
कभी धूप कभी छाया है ।
मनुष्यों को इसी माया में फंसाया है,
मनुष्य उसके आगे क्या कर पाया है।

श्री राम जन्मोत्सव पर समारोह

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मिर्जापुर द्वारा दिनांक ३० व ३१ मार्च २०२३ को श्री राम जन्मोत्सव (रामनवमी) के शुभ अवसर पर स्थान आर्य धर्मशाला शिव शंकरी धाम मिर्जापुर में भव्य समारोह का आयोजन किया गया।

प्रातः महात्मा राजेंद्र योगी सरस्वती जी के ब्रह्मत्व में हवन किया गया तत्पश्चात महात्मा सत्य मुनि वानप्रस्थी पंडित राम आधार शास्त्री व श्री जीवन सिंह आदि के प्रवचन व भजन हुए।

कार्यक्रम में जनपद की आर्य समाजों के प्रतिनिधि सहित सैकड़ों धर्म प्रेमी नर नारी उपस्थित थे। मुख्य रूप से सर्व श्री नागेंद्र सिंह, झगड़ सिंह, अवधेश सिंह, अनिल कुमार आर्य, अमरनाथ आर्य, रविंद्र कुमार सिंह आदि की गरिमामय उपस्थिति रही। विशेष रुप से श्री सत्यनारायण सिंह मंत्री जिला आर्य प्रतिनिधि सभा मिर्जापुर का सहयोग सराहनीय रहा।

ओ३म्

आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा (उ० प्र०)
२०२३-२४
प्रवेश प्रारम्भ
कक्षा 6, 7 व 8 में
बालकों का प्रवेश प्रारम्भ
नि:शुल्क शिक्षा | आर्ष परम्परा | नि:शुल्क आवास
प्राचीन एवं आधुनिक विषय
वेद, संस्कृत व्याकरण का विशेष अध्ययन।
सन्ध्या-हवन , संस्कार प्रशिक्षण का प्रमुख केन्द्र।
सस्वर वेदपाठ | संस्कृत संभाषण | पूर्णतः आवासीय
शारीरिक शिक्षा, योग, ध्यान, आसन, प्राणायाम,
लाठी चलाना, कुश्ती आदि का प्रशिक्षण
गुरुकुलीय अनुशासित दिनचर्या, मातृपितृभक्त - राष्ट्रभक्त –
ईशभक्त बनाने के लिए गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को अपनायें।
अधिक जानकारी के लिये निम्न पते पर संपर्क करें
प्रवेश कार्यालय : आर्ष गुरुकुल यज्ञतीर्थ, एटा (उ०प्र०)
कुल सचिव डॉ वागीश आचार्य | प्रधान श्री योगराज अरोड़ा | मन्त्री डॉ विनय विद्यालंकार
मो०- 8791067717, 9716607717
www.arshgurukuletah.com Email:arshgurukuletah@gmail.com

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–पंकज जायसवाल भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस,
5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है–सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।